सवाल हमारे
जवाब कुरआन के

मिन जानिब

पैग़ाम–ए–अमन (रजि०)

E-253/6A, संगम विहार,

नई दिल्ली-110062

फ़ोन : 011-20319437

मोबाइल : 91+9818321456

ईमेल- paighamEaman@yahoo.com

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है ।

कुरआन एक ऐसी किताब है, जो अल्लाह की ओर से हर इंसान की हिदायत और रहनुमाई के लिए भेजी गई है । यह सच और झूठ का फ़ैसला करने वाली किताब है; यह इंसानों को बुराइयों से पाक-साफ़ होने का तरीक़ा बताती है और इंसानों को दुनिया और आख़िरत में अमन से रहने का रास्ता बताती है । इसलिए कुरआन सभी इंसानों के लिए है, किसी ख़ास क़ौम के लिए नहीं–

"यह कुरआन तो तमाम जहानों के लिए एक आम नसीहत है ।"

(सूरह् यूसुफ़, 12:104)

लेकिन इससे हिदायत सिर्फ़ उन्हीं लोगों को मिलती है, जो ईमान रखते हैं कि यह कलाम उनके रब की तरफ़ से है और जो अल्लाह से डर रखने वाले हैं–

"इंसानों के लिए यह कुरआन आँखों की रौशनी की तरह है, हिदायत और रहमत उन लोगों के लिए जो यक़ीन ले आए ।"

(सूरह् अल-जासिया, 45:20)

कुरआन हम इंसानों के लिए है । यह इंसानों की कामयाबी और नाकामयाबी के बारे में बताता है और इंसानों के ज़िन्दगी से जुड़े सवालो के जवाब देता है । जैसे– इंसान क्यों पैदा किया गया? कहाँ से आया ? कहाँ जाना है? इंसान की ज़िन्दगी का मक़सद क्या है ? अगर कोई मक़सद है, तो उसमें कामयाब होने का क्या तरीक़ा है ? वगैरह, वगैरह और बहुत-से सवाल हैं, जिनके जवाब हमें कुरआन में मिलते हैं; तो ज़रूरत इस बात की है कि हम कुरआन को पढ़ें और समझें–

"और हमने कुरआन को नसीहत हासिल करने के वास्ते आसान कर दिया है; तो कोई है जो नसीहत हासिल करे ?"

(सूरह् अल-कमर, 54:22)

कुरआन सरल अरबी ज़बान में नाज़िल हुआ है और यह पूरी इन्सानियत के लिए हिदायत और रहनुमाई है । कुरआन को आम तौर पर दो मक़सद के लिए पढ़ा जाता है– एक अल्लाह की हिदायत और रहनुमाई हासिल करने के लिए; दूसरे इस्लामी कानून बनाने के लिए । पहले मक़सद के लिए अगर सिर्फ़ अरबी, उर्दू या दूसरी जब़ानों का तर्जमा ही पढ़ा जाए, तो अल्लाह की रहनुमाई और हिदायत मिल जाएगी; पर दूसरे मक़सद के लिए, जो कि एक अहम काम है, इसके लिए अरबी ज़बान पर पूरी महारत हासिल होनी चाहिए और हदीसों का भी मुक्कमल इल्म होना चाहिए और यह काम एक बहुत बड़ा आलिम ही कर सकता है ।

इस किताब का मक़सद कुरआन का हमारी ज़िन्दगी से जुड़ाव पैदा करना है कि कुरआन इंसान की ज़िन्दगी के हर पहलू में रहनुमाई करता है । यही हिदायत की सच्ची राह दिखाता है । इसलिए कुरआन को सिर्फ़ पढ़ लेना, लेकिन इसे समझकर ना पढ़ना और इसके बताए गए अहक़ामों पर अमल करने की कोशिश भी ना करना, हक़ीकत में कुरआन की नाक़द्री है ।

इस किताब में हमने इंसानों के कुछ सवालों के जवाब कुरआन से दिए हैं; लेकिन हर सवाल का जवाब हम इस किताब में शामिल नहीं कर पाए; इसका मतलब यह नहीं कि कुरआन में जवाब नहीं, कुरआन में जवाब है, और सवाल के जवाब में जो आयत लिखी हुई है, सिर्फ़ वही जवाब नहीं है, बल्कि कुरआन में दूसरी आयतों में भी जवाब मौजूद हैं, जो हमें और आपको ख़ुद कुरआन पढ़ के हासिल करने होंगे; मतलब यह कि हमने सवाल-जवाब का एक नमूना भर पेश किया है ।

इस उम्मीद के साथ कि इस किताब को पढ़ने के बाद लोगों में कुरआन को समझकर पढ़ने का शौक पैदा हो; लोग कुरआन में अपने सवालों के जवाब तलाशें और जवाब से इत्मीनान हासिल कर के अल्लाह के बताए अहक़ामों पर अमल करने की कोशिश करें ।

इस किताब में सभी सवालों के जवाब के लिए कुरआन की जो प्रति इस्तेमाल की गई है वह हज़रत मौलाना अब्दुल करीम पारेख साहब की 'तशरीहुल कुरआन मजीद' है, जो हिन्दी में सब से सरल

मआ़ने वाला कुरआन है और कुछ सवालों के जवाब में हमने इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के कुरआन के हिन्दी तर्जमा 'कन्जुल ईमान' (REF:927) से भी दिए हैं । किताब पढ़ने वालों से इल्तिज़ा है कि सवालों के जवाब में आयत के पीछे सूरह् का नाम, सूरह् नम्बर और आयत नम्बर दिए है । वे उन जवाबों को असल कुरआन मजीद में भी देख लें ।

अल्लाह से दुआ है कि हमारी अदना सी कोशिश को कुबूल फ़रमाए । आमीन !

आगे पढ़ने से पहले कुछ अहम जानकारी

हमने किताब में सिर्फ़ हिन्दी तजर्मा ही लिखा है और उसके साथ सूरह् का नाम, नम्बर और आयत नम्बर भी लिखा है, ताकि कोई भी पढ़ने वाला कुरआन मजीद का अरबी मतन चेक कर सके । हर आयत के बाद ब्रेकिट में पहले सूरह् का नाम, नम्बर और उसके बाद आयत नम्बर है । मिसाल के तौर पर अगर यूँ (सूरह् अल-मुल्क, 67:2) लिखा है, तो सूरह् अल-मुल्क का नम्बर 67 है : आगे जो 2 नम्बर है वह उसक आयत का नम्बर है, अगर किसी नम्बर के आगे * निशान हो, तो वह यह बताता है कि इस आयत की तफ़सीर कुरआन में मौजूद है । उसे पढ़ने वाला अगर चाहे तो वह मौलाना अब्दुल करीम पारेख साहब की 'तशरीहुल कुरआन मजीद' में देख ले। इनका यह 'कुरआन मजीद' हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी व अन्य ज़बानों में मौजूद है ।

किताब में जवाब की आयत के शुरू में अगर यह निशान --------- है, तो इसका मतलब आगे से आयत को हमने छोड़ दिया है और अगर यह निशान --------- आखिर में है तो हमने आयत के बाद के हिस्से को छोड़ दिया है । यानी हमने उतना ही जवाब लिखा है, जो उस सवाल से मुत्तालिक है । अगर किसी को पूरी आयत पढ़नी हो, तो वे भी असल कुरआन मजीद में देख सकते हैं ।

उम्मीद है कि इन उसूल के ज़रिए आप अगर यह किताब पढ़ते हैं तो आपके समझने में आसानी होगी और अल्लाह की बात आपके दिलो-दिमाग़ पर असर करेगी ।

अल्लाह तआला आपकी पढ़ने की कोशिश को क़बूल फ़रमाए और हिदायत की राह अल्लाह रब्बुल-आलमीन आसान फ़रमाए ।

आमीन ।

नोट : इस किताब को ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचाएँ । कोई भी इस किताब को छपवा सकता है, बिना किसी फेर-बदल या संशोधन के इलाकाई भाषाओं में भी छपवा सकते हैं ।

ग़लती से किताब में अगर कुछ मिसप्रिंट हो जाता है तो उसके लिए माफ़ी चाहते हैं । वे असल कुरआन मजीद में देख लें । उस ग़लती को सुधारा जाएगा, इसके लिए हमें ई-मेल करें- paighamEaman@yahoo.com

1. मेरी ज़िन्दगी और मौत का मक़सद क्या है ?

जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में से किसके काम अच्छे हैं । और वह बड़ा गालिब माफ़ करने वाला है । (सूरह् मुल्क, 67:2)*

मैंने जिन्नों और इंसानों को अपनी इबादत के लिए बनाया है ।

(सूरह् ज़ारियात, 51:56)

2. क्या अल्लाह मेरा इम्तिहान लेता है ?

मुँह से ईमान लाने का दावा कर लेंगे और उनकी आज़माइश न की जाएगी, ऐसा हिसाब जिन लोगों ने लगा रखा है वे गलती पर हैं।

(सूरह् अनकबूत, 29:2)

3. अल्लाह मेरा इम्तिहान कैसे लेता है ?

हम ज़रूर आज़माएँगे तुमको ख़ौफ़ और भूख से और कुछ माल और जान के नुक़सान से और फलों की पैदावार के घाटे से भी । ऐसे मौक़े पर सब्र करने वालों को खुशख़बरी सुना दो ।

(सूरह् अल-बक़रा, 2:155)

और जान रखो कि तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद तुम्हारे लिए आज़माइश है और यह कि अल्लाह के नज़दीक बड़ा अज्र भी है ।

(सूरह् अनफ़ाल, 8:28; सूरह् तग़ाबुन, 64:15)

---------और हम तुम्हें हर बुरी-भली हालत में डाल कर तुम्हारा इम्तिहान लेंगे । और हमारी तरफ़ तुम सब को लौट कर आना है ।

(सूरह् अम्बिया, 21:35)

4. मुझ पर मुसीबतें क्यों आती है ?

और तुम पर जो मुसीबत आती है, वह तुम्हारे हाथों के किए हुए कामों की वजह से आती है; जब कि बहुत-से गुनाह तो वह (अल्लाह) माफ़ फ़रमा देता है । (सूरह् शूरा, 42:30)

ऐ आदमी, तुझ को जो कुछ भी सुख-चैन और खुशहाली आए तो वह सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है और अगर कोई तकलीफ़ आ पड़े तो इस का सम्बन्ध और सबब, ऐ इंसान, तेरी ही तरफ़ है-----------।

(सूरह् निसा, 4:79)*

5. मुझ पर जब कोई मुसीबत आती है तो क्या वह मेरी बर्दात से ज़्यादा होती है ?

किसी आदमी को उसकी ताकत से ज़्यादा तकलीफ़ देना अल्लाह का दस्तूर नहीं-----------। (सूरह् अल-बक़रा, 2:286)

और हम किसी जान पर उसकी हैसियत से ज़्यादा बोझ डालना नहीं चाहते------------। (सूरह् मोमिनून, 23:62)

6. मुझपर जब कोई मुसीबत आए तो मैं क्या करूँ, क्या दुआ मागूँ?

बेटा, नमाज़ को क़ायम रखना, भले कामों का हुक्म करना और बुरे कामों से मना करते रहना और इस ख़िदमत में तुझ पर जो मुसीबत पड़ जाए उसे बर्दाशत कर लेना । बेशक जी को थाम लेना बड़े हौसले का काम है । (सूरह् लुक़मान, 31:17)

--------------------ऐ हमारे रब ! अगर हम भूल जाएँ या खता कर जाएँ तो हमारी पकड़ ना फ़रमा; और ऐ हमारे रब ! हम पर वह बोझ मत डाल जो तू ने हमसे पहले लोगों पर डाला था; ऐ हमारे रब ! हम को वह बोझ भी उठाने में मत लगा जिसकी ताकत हम में ना हो; हम को माफ़ फ़रमा; हमारे गुनाह बख्श दे, और हम पर रहम फ़रमा; तू ही हमारे काम बनाने वाला है; ऐ अल्लाह, इंकारी क़ौम के मुक़ाबले में तू हमारी मदद फ़रमा । (सूरह् अल-बक़रा, 2:286)

7. वे कौन-से काम हैं जिन्हें करने से अल्लाह मुझे नापसन्द करता है?

और लोगों से गाल फुला कर बेरुखी से बात ना करना और ज़मीन पर इतरा कर ना चलना । बेशक बात यह है कि अल्लाह किसी भी ऐसे आदमी को पसन्द नहीं फ़रमाता, जो अपनी बड़ाई हाँकता हो और घमंड ज़ाहिर करता हो । (सूरह् लुक़मान, 31:18)*

तुम अपने उसी एक रब से दुआ करो गिड़गिडा़ कर विनम्रता से और चुपके से । जो लोग हद से आगे बढ़ते हैं अल्लाह उन को पसन्द नहीं करता । (सूरह् आराफ़, 7:55)*

8. वे कौन-से काम हैं जिन्हें करने से अल्लाह मुझे पसन्द करता है?

जो लोग अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, चाहे ख़ुशहाली हो या तंगी हो और गुस्से को पी जाते हैं और लोगों के क़ुसूर माफ़ करते हैं तो अल्लाह भी ऐसी नेकी करने वालों से मुहब्बत रखता है । (सूरह् आले-इमरान, 3:134)

ईमान वालों के दो जत्थों में कभी टकराव हो जाए तो उनके बीच सुलह सफाई की कोशिश करो । अगर इन दोनों में से कोई ज़्यादती करे, तो फिर ज़्यादती करने वाली जमाअत से लड़ो; यहाँ तक की वे अल्लाह की हुक्म की तरफ़ झुक जाएँ । फिर वे अपना तरीक़ा दुरुस्त कर लें, तो दोनो में इन्साफ़ से सुलह करा दो और इन्साफ़ का ख़ूब ख़्याल रखो । बेशक अल्लाह इन्साफ़ करने वालो से मुहब्ब्त फ़रमाता है । (सूरह् हुजुरात, 49:9)

9. मैं अल्लाह के नजदीक बड़ा मरतबा कैसे पा सकता हूँ ?

और जो कोई भी अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने और अल्लाह से डरे और उसकी नाराज़ी से बचे, बस ऐसे ही लोग बड़े मरतबे पाने वाले हैं । (सूरह् नूर, 24:52)

ऐ ईमान वालो ।अल्लाह का तकवा इख़्तियार करो और हर आदमी को देखना चााहिए कि उसने आने वाले कल के लिए आगे क्या भेजा है और डरो अल्लाह से । बेशक अल्लाह को उन तमाम कामों की ख़बर है जो तुम करते हो । (सूरह् हश्र, 59:18)

10. मुझे लोगों के साथ कैसा व्यवहार रखना चाहिए ?

नरमी और माफ़ करने से काम लो और नेकी के काम का हुक्म करो और जाहिलों से उलझने के बजाय दामन बचाकर निकल जाओ ।
(सूरह् आराफ़, 7:199)

और नेकी और बदी कभी दोनों बराबर नहीं हो सकती; कोई बुराई करे तो उसे भले तरीके से टाल दो, फिर इसका नतीजा यह निकलेगा कि तुम्हारे और जिस के बीच दुश्मनी होगी वह गहरी दोस्ती में बदल जाएगी । (सूरह् हा-मीम सजदा, 41:34)

11. मेरी लोगों के साथ बातचीत कैसी होनी चाहिए ?

और मेरे बन्दों से फ़रमा दो कि वही बात करें जो बेहतर हो; यक़ीनन शैतान उनके आपस में खिंचाव-तनाव पैदा कर देता है । बेशक शैतान इंसान का खुला हुआ दुश्मन है। (सूरह् बनी-इसराईल, 17:53)

बेटा, अपनी चाल में दरमियानी तरीक़ा इख़्तियार करो और अपनी आवाज़ में शरीफाना तौर पर धीमा लहजा इस्तेमाल करो । बेशक तमाम आवाज़ों में नापसन्द आवाज़ गधे की आवाज़ है । (सूरह् लुक़मान, 31:19)*

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो (उसका हुक्म मानते हुए) बात सीधी और ठीक-ठीक कहो । (सूरह् अहज़ाब, 33:70)

रहमान के ख़ास बन्दे वे हैं जो ज़मीन पर बग़ैर घमंड की चाल से चलते हैं और जाहिल लोग जब उन्हें फुज़ूल बहस में उलझाना चाहते हैं, तो ये लोग 'सलामत रहो' कह कर वहाँ से चल पड़ते हैं ।

(सूरह् फुरक़ान, 25:63)

12. क्या में लोगों से वह कह सकता हूँ जो मैं खुद ना करूँ ?

क्या तुम दूसरों को हुक्म करते हो भले काम करने का और अपने आप को भूल जाते हो, और तुम किताब (कुरआन) भी पढ़ते हो; फिर भी क्या अक़्ल से काम ना लोगे ? (सूरह् अल-बक़रा, 2:44)

ऐ ईमान वालो ! ऐसी बात क्यों कहते हो, जो तुम करते नहीं ।

(सूरह् सफ़्फ़, 61:2)

जो कहते हो, उसे करते नहीं यह बात अल्लाह को बहुत नापसन्द है।

(सूरह् सफ़्फ़, 61:3)

13. मैं सीधे रास्ते पर कैसे जमा रह सकता हूँ ?

अल्लाह की रस्सी (यानी कुरआन) को सब मिलकर मज़बूती से पकड़ रखो और आपस में फूट न डालो, और याद रखो अल्लाह की नेमत को जो तुम पर है, जब तुम आपस में दुश्मन थे, फिर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों के बीच मुहब्बत डाल दी, तब तुम अल्लाह की नेमत से भाई-भाई हो गए, और तुम तो आग के गढ़े के किनारे थे, तब अल्लाह ने तुम को वहाँ से बचा कर निकाल दिया । इसी तरह अल्लाह तुमहारे लिए अपनी आयतें बयान फ़रमाता है, ताकि तुम ठीक रास्ते पर चल सको । (सूरह् आले-इमरान, 3:103)

अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और भलाई का हुक्म करते हैं और बुरी बातों से मना करते हैं और नेक कामों में दौड़ कर हिस्सा लेते हैं, ऐसों ही का शुमार नेक लोगों में है ।

(सूरह् आले-इमरान, 3:114)

ऐ ईमान वालो, सब्र से डटे रहो और सब्र की वसीयत करते रहो, और एक-दूसरे से बंधे रहो और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम कामयाब हो जाओ । (सूरह् आले-इमरान, 3:200)

अगर बचते रहोगे उन बड़े-बड़े गुनाहों से, जिनसे तुम को मना किया गया है, तो हम तुम्हारे दूसरे कुसूरों को माफ़ कर देंगे---------------।

(सूरह् निसा, 4:31)

14. मुझे कौन-सी चीजें ग़फ़लत में डाल सकती हैं ?

शहरों में काफ़िरों की चलत-फिरत तुम को फ़रेब (ग़फ़लत) में न डाल दे । चन्द रोज़ के सामान की थोड़ी-सी बहार है । फिर उनका ठिकाना जहन्नम है, जो बहुत बुरी जगह है । (सूरह् आले-इमरान, 3:196,197)

ऐ इंसानो, अल्लाह का वादा सच्चा है । ध्यान रहे कि इस पार की दुनिया की ज़िन्दगी तुम को धोखे में न डाल दे और होशियार रहो कि कोई धोखेवाज़ तुमको धोखा देकर अल्लाह की बात बता कर किसी झूठी बात पर न चला दे । (सूरह् फ़ातिर, 35:5)

ऐ ईमान वालो ! सावधान रहो कि तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र (याद) से ग़ाफ़िल न कर दें, और जो कोई भी अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हुआ तो ऐसे लोग नुक़सान में रहेंगे ।

(सूरह् मुनाफिकून, 63:9)

15. दुनिया में हम और हमारा सामान कितने वक़्त तक के लिए है?

हमने इनको दुनिया की ज़िन्दगी की रौनक वाली कई चीज़ें इम्तिहान के लिए बहुत थोड़ी मुद्दत के लिए बरतने को दी हैं--। (सूरह् ताहा, 20:131)

जो कुछ तुम्हारे पास (दुनिया में) है उसे ख़त्म हो जाना है और जो अल्लाह के पास है उसे बाकी रह जाना है, जो लोग सब्र से काम लेंगे, उनके नेक आमाल का बदला हम भरपूर अता करेंगे ।

(सूरह् नह्ल, 16:96)

------और ये लोग दुनिया की ज़िन्दगी में मगन हैं; जब कि आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी का सामान थोड़ी देर के इस्तेमाल के लिए है । (सूरह् रअद, 13:26)

ऐ मेरी क़ौम ! दुनिया की ज़िन्दगी थोड़े दिन का सामान है और आख़िरत की फ़िक्र में लगो । वहाँ का घर हमेशा ठहरने की जगह है। (सूरह् मोमिन, 40:39; सूरह् अनआम, 6:32)

जान लो कि दुनिया की ज़िन्दगी खेल-तमाशे की तरह ग़फलत में डालने वाली, दिखावा और एक-दूसरे पर फ़ख़्र (घंमड) जताना और माल और औलाद में ज़्यादती चाहना है -------------। (सूरह्, हदीद 57:20)

16. मुझे दुनिया और आख़िरत में बेहतर ज़िन्दगी कैसे मिल सकती है?

अल्लाह के दोस्त वे हैं, जो ईमान लाए और अल्लाह की नाफ़रमानी से बचते रहे । उनके लिए दुनिया व आख़िरत की ज़िन्दगी में बशारत ही बशारत है । अल्लाह का फ़रमान बदला नहीं जा सकता और यही बड़ी कामयाबी है। (सूरह् यूनुस, 10:63, 64)

चाहे कोई मर्द हो या औरत, जो भी नेक अमल करके आवे और ईमान वाला हो, तो ऐसों को हम पाकीज़ा ज़िन्दगी अता फ़रमाएँगे और आख़िरत में उनके अच्छे कामों का बदला भी बहुत अच्छा देंगे ।

(सूरह् नह्ल, 16:97)

आप मेरे ईमान वाले बन्दों से कह दो : अपने रब का तक़्वा (परहेज़गारी) इख़्तियार करें यानी उसकी नाफ़रमानी से बचते रहें; तो ऐसे नेक लोगों के लिए दुनिया में अच्छा बदला है---। (सूरह् जुमर, 39:10)

जो कोई चाहे सवाब दुनिया का, तो बस अल्लाह के पास तो दुनिया और आख़िरत दोनों का सवाब मौजूद है और अल्लाह ख़ूब सुनने वाला और देखने वाला है । (सूरह् निसा, 4:134)

17. मेरी मौत किस हाल में आनी चाहिए ?

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरते रहो जैसा उस से डरने का हक़ है ! और तुम को मौत आए तो सिर्फ़ मुसलमान ही की हालत में ।

(सूरह् आले-इमरान, 3:102)

और यही वसीयत इब्राहीम (अलै०) ने अपने बेटों को की थी और याकूब (अलै०) ने भी यही वसीयत की थी : ऐ बेटो ! अल्लाह ने अपनी पसन्द से तुमको एक दीन (इस्लाम) अता किया; फिर तुम इस्लाम के सिवा किसी और दीन पर न मरना । (सूरह् अल-बक़रा, 2:132)*

18. मुझे किस राह पर चलना चाहिए ?

अब जो लोग अल्लाह पर ईमान लाएँगे और इस दलील (कुरआन) को मज़बूती से पकड़ रखेंगे, तो अल्लाह बहुत जल्द उन को अपनी रहमत

में दाख़िला देगा और उन पर अपना फ़ज़्ल करेगा और अपनी तरफ़ आने के सीधे रास्ते पर चला कर मंज़िले-मक़सूद तक पहुँचा देगा ।

(सूरह् निसा, 4:176)

एलान कर दो, ऐ इंसानो ! मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल बना कर भेजा गया हूँ, जिसकी बादशाही आसमानों और ज़मीन में हर जगह है; उसके सिवा और कोई माबूद नहीं; वही ज़िन्दगी देता है, वही मौत देता है । बस ऐ लोगो, तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर कि इस नबी को अल्लाह के सिवा किसी ने पढ़ाया नहीं, जो अल्लाह पर और उसके कलामों पर ईमान रखता है । बस उसकी राह चल पड़ो, ताकि तुम कामयाब हो जाओ ।

(सूरह् आराफ़, 7:158)*

बेशक यह कुरआन ही वह राह दिखाता है जो सब राहों से सीधी राह है और ख़ूब मज़बूत है और ईमान वालों को बशारत सुनाता है कि जो नेक अमल करते हैं, उनके लिए ख़ूब बड़ा अच्छा बदला है ।

(सूरह् बनी-इसराईल, 17:9)

जो लोग ईमान लाकर अपने ईमान को शिर्क जैसे ज़ुल्म की मिलावट से बचाए रखते हैं, नजात और अमन सिर्फ़ उन के लिए है, और यही लोग सही रास्ता पा गए । (सूरह् अनआम, 6:83)

और जान लो कि अल्लाह तक पहुँचने का रास्ता पक्का और तयशुदा है और दूसरे रास्ते टेढ़े हैं----------------------। (सूरह् नह्ल, 16:9)

19. मुझे किस का हुक्म मानना चाहिए ?

ऐ ईमान वालो, हुक्म मानो अल्लाह का और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का और तुम में जिन लोगों को काम चलाने के लिए साहिबे-इख़्तियार बनाया गया है, उनका भी कहना मानते रहो । फिर अगर किसी बात पर तुम में झगड़ा हो जाए तो सब मिल कर पलट आओ अल्लाह और रसूल की तरफ़ । अगर तुम अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो तो (तुम को यही करना होगा) इसी में तुम्हारी भलाई है और इसका अंजाम भी बहुत अच्छा होगा ।

(सूरह् निसा, 4:59)*

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सब हुक्मों को क़बूल रखो, जब भी किसी काम पर

अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का बुलावा हो तो फ़ौरन हाज़िरी दो । इसी से तुम्हारी ज़िन्दगी बन जाएगी---।

(सूरह् अनफ़ाल, 8:24)

हुक्म मानो अल्लाह का और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का, ताकि तुम पर रहम किया जाए । (सूरह् आले-अमरान, 3:132)

20. मुझे कौन से हिम्मत वाले काम करने चाहिए ?

तुम में एक जमाअत ज़रूर होनी चाहिए जो बुलाती रहे अच्छे कामों की तरफ़, भलाइयों का हुक्म करे और बुराइयों से मना करती रहे और यही लोग कामयाब होने वाले हैं । (सूरह् आले-इमरान, 3:104)

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), आप अपने पालनहार के रास्ते की तरफ़ लोगों को हिक्मत, दानाई और दानिशमन्दी के साथ और अच्छी नसीहत कर के दावत देते रहिए । ज़रूरत पड़ने पर इनसे बहस करनी पड़े, तो निहायत ख़ूबी के साथ बात समझाइए ----------।

(सूरह् नह्ल, 16:125)

बेटा, नमाज़ को क़ायम रखना, भले कामों का हुक्म करना और बुरे कामों से मना करते रहना और इस ख़िदमत में तुझ पर जो मुसीबत पड़ जाए उसे बर्दाशत कर लेना । बेशक जी को थाम लेना बड़े हौसले का काम है। (सूरह् लुक़मान, 31:17)

21. मुझे अपने माँ-बाप के साथ कैसा सुलूक करना चाहिए ?

अपने रब का फ़ैसला सुन लो कि बन्दगी अल्लाह के सिवा किसी की न की जाए और माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक किया जाए । तुम्हारी मौजूदगी में अगर माँ-बाप में से कोई एक या दोनों बुढ़ापे तक पहुँच जाएँ, तो उनको उफ़ तक ना कहो और उनको झिड़कना भी मत और बातचीत में माँ-बाप की इज़्ज़त और अदब का बहुत ख़्याल रखना ।

मुहब्बत में मेहरबान होकर अपने दोनों बाज़ू उनकी ख़िदमत के लिए बिछा दो और यह दुआ करते रहो कि ऐ मेरे रब ! तू इन दोनों पर रहम फ़रमा, जैसा कि इन्होंने मेरे बचपन की बेबसी में मुझे पाल-पोस कर मेहरबानी की थी । (सूरह् बनी-इसराईल, 17:23,24)

और हमने इंसान को अपने माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करने की ताकीद से वसीयत फ़रमा दी कि उसकी माँ ने बड़ी मशक़्क़त के साथ पेट में रखा और बच्चे की पैदाइश पर बहुत तकलीफ़ उठाई और बच्चे के पेट

में रहने से लेकर दूध छुड़ाने तक, तीस महीने ये ख़िदमत अन्जाम देती रही । अब आदमी बड़ा होकर जवानी को पहुँचा तो अच्छा भला आदमी यही कहेगा कि ऐ मेरे रब ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र अदा करूँ--------------। (सूरह् अहक़ाफ़, 46:15;* सूरह् लुक़मान, 31:14)

22. मुझे अपने माँ-बाप की कौन-सी बात नहीं माननी चाहिए ?

हाँ अगर माँ-बाप तुझ पर दबाव डालें कि मेरे साथ (यानी अल्लाह के साथ) तू शिर्क कर ले, जिसकी इल्मी दलील तेरे पास कभी नहीं हो सकती, तो फिर तू उनका ये हुक्म कभी न मानना, लेकिन दुनिया में उनके साथ भली तरह गुज़ारा करते रहना । राह तो सिर्फ़ उसकी चलना जो मेरी तरफ़ रूजूअ हो गया हो; फिर तुम सब के सब मेरी ही तरफ़ लौट कर वापस आओगे । तब मैं तुमको तुम्हारे किए हुए सब कामों की ख़बर दूँगा । (सूरह् लुक़मान, 31:15)

और हम ने इंसान को अपने माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करने की वसीयत कर दी, हाँ अगर माँ-बाप इस बात पर ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ किसी को शरीक बताने लगे जिस का तुझे कुछ इल्म नहीं, तो फिर माँ-बाप का इस बारे में कहना मत मानना । मेरी ही तरफ़ तुम सब को वापस आना है । फिर जो कुछ भी काम तुमने दुनिया में किए हैं सब की ख़बर तुम को बता दूँगा । (सूरह् अनकबूत, 29:8)*

23. मुझे अपने पूर्वजों यानी बाप-दादाओं की राह पर यानी उनके रस्मो-रिवाज पर कब नहीं चलना चाहिए ?

और जब उनसे कहा जाए कि अनुसरण (इत्तिबा) करो उसका, जो अल्लाह ने उतारा है (कुरआन में); तो कहते हैं हम तो चलेंगे उस राह पर जिस पर अपने बाप-दादों को पाया । भला अगर उनके बाप-दादा कुछ अक़्ल न रखते हों और न ही सीधे रास्ते पर हों (तब वे किस राह चलेंगे) । (सूरह् अल-बक़रा, 2:170)

और ये लोग जब कोई बेहयाई का (यानी दीन के ख़िलाफ़) काम करते हैं तो कहते हैं कि हम ने अपने बाप-दादाओं को इसी तरह पाया है और अल्लाह ने हमको यही हुक्म दिया है । आप कह दो कि बेहयाई का हुक्म अल्लाह हरगिज़ नहीं देता । क्यों झूठ बोलते हो अल्लाह पर, जब कि तुम को इसकी कुछ भी जानकारी नहीं (यानी कुरआन और हदीस का इल्म नहीं) । (सूरह् अल-बक़रा, 2:28)*

-----वे बोले कि क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि हम सिर्फ़ एक अल्लाह की बन्दगी करें और वह सब छोड़-छाड़ दें जिन को हमारे बाप-दादे पूजते रहे; बस अब तू जिस अज़ाब की धमकी देता है उसे लाकर दिखा दे; अगर तू सच्चा है---------------------। तुम्हारे रब की तरफ़ से अब तो तुम पर बला और अज़ाब आ कर रहेगा । क्यों झगड़ते हो मुझ से ऐसे बनावटी नामों (माबूदों) पर, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादों ने घड़ लिए हैं ? अल्लाह ने उन के लिए कोई दलील नहीं उतारी । बस अब इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वाला हूँ । (सूरह् आराफ़, 7:70,71)*

ये जो अल्लाह के सिवा तुम दूसरों की इबादत करते हो, ये सब नाम ही नाम हैं, जो तुमने घड़ लिए हैं और तुम्हारे बाप-दादाओं ने भी यही कुछ किया था, जिस पर अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी । ख़बरदार हो जाओ कि हुक्म तो सिर्फ़ अकेले अल्लाह का है और उसी ने यह हुक्म दिया है कि एक अल्लाह के सिवा किसी की भी बन्दगी न करो । यही दीन है, जिससे मज़बूत बन्दोबस्त क़ायम होता है; लेकिन अक्सर लोग इस सीधी बात को नहीं जानते ।

(सूरह् यूसुफ़, 12:40)

24. ख़ुदा ने मेरे लिए कौन-सा मज़हब (धर्म) पसन्द किया है ?

बेशक अल्लाह के पास क़बूल होने वाला दीन (मज़हब) सिर्फ़ इस्लाम है, (यानी अल्लाह के सामने सर झुकाने वालों का दीन) आसमानी किताब पाने वालों ने इल्म आ जाने के बाद जो इख़्तिलाफ़ किया तो ज़िद में आकर यह हरकत की । और जो कोई भी इंकारी हुआ अल्लाह की आयत से तो अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है ।
(सूरह् आले-इमरान, 3:19)

और जो कोई इस तरीके को छोड़कर कोई और दीन (मज़हब) चाहे इसे हरगिज़ क़बूल नहीं किया जाएगा और ऐसा आदमी आख़िरत में घाटे में रहेगा । (सूरह् आले-इमरान, 3:85)

जबकि उन्हे सिर्फ़ यही हुक्म दिया गया था कि एक अल्लाह की तरफ़ के होकर इबादत करें और अपना दीन उसी के लिए ख़ालिस कर लें और नमाज़ क़ायम करें, ज़कात देते रहें, इन्तिज़ामी बन्दोबस्त वाला यही असल दीन है । (सूरह् बैयिनह, 98:5; सूरह् रूम, 30:30)

25. क्या मेरे लिए दीन (इस्लाम) पर चलना कठिन है ?

अल्लाह को चाह कर पा लेने में ख़ूब मेहनत कर डालो, ऐसी मेहनत और अनथक कोशिश जैसा कि उसका हक़ है । उस ने तुम्हारा चुनाव कर लिया है और दीन में तुम पर कोई तंगी-कठिनाई उस ने नहीं डाली। तुम्हारे बाप इब्राहीम (अलै०) की मिल्लत पर तुमको खड़ा कर दिया । उस ने तुम्हारा नाम ताबेअ-फ़रमान यानी मुस्लिम रखा इस के पहले भी और इस किताब में भी तुम्हारा नाम मुसलमान मशहूर हुआ, ताकि रसूल तुम पर गवाही क़ायम कर दें और तुम सब इंसानों पर हक़ की गवाही दो । बस नमाज़ को अच्छी तरह मज़बूती से क़ायम रखो और ज़कात की अदायगी जारी करो और सब मिलकर अल्लाह के साथ अपना ताल्लुक मज़बूत बनाए रखो । वही तुम्हारा कारसाज़ है। बस क्या ही अच्छा मौला है और कितना अच्छा मददगार ! (सूरह् हज, 22:78)*

बस बेशक हर मुशकिल के साथ आसानी है । यक़ीनन हर कठिनाई के साथ आसानी है । (सूरह् अल-इनशिराह, 94:5,6)

26. वे कौन-से काम हैं जिनके करने से मुझे जन्नत मिल सकती है?

और जो लोग अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं चाहे ख़ुशहाली हो या तंगी हो और ग़ुस्से को पी जाते हैं और लोगों के क़ुसूर माफ़ करते हैं, तो अल्लाह भी ऐसे नेकी करने वालों से मुहब्बत रखता है ।

और ऐसे लोग जब बेशर्मी का कोई काम कर बैठें या अपने आप का बुरा कर लें तो अल्लाह को ख़ूब याद करते हैं, और फ़ौरन अपने गुनाहों की बख्शिश माँगते हैं, और ख़ूब समझ लो कि गुनाहों को अल्लाह के सिवा कौन माफ़ कर सकता है ? और जान-बूझ के अपने गुनाहों पर अड़ते नहीं ।* तो बदले में उनके रब ने उन्हें माफ़ी दे दी और जन्नत भी अता कर देगा जिस के नीचे नहरें बहती होंगी । वहाँ पर हमेशा-हमेशा के लिए रहेंगे, भले काम करने वालों को इनाम से भरपूर मज़दूरी मिल गई । (सूरह् आले-इमरान, 3:134, 135, 136)

जो लोग ईमान लाए और अपना घर-बार छोड़ा, और अल्लाह के रास्ते में ख़ूब मेहनत उठायी, राहे-ख़ुदा में अपना माल ख़र्च किया और जान भी क़ुर्बान कर दी, अल्लाह के यहाँ इन को बड़े-बड़े दर्जे हैं और यही लोग कामयाब होंगे । इन का रब इनको बशारत देता है अपनी तरफ़

से रहमत और रज़ामन्दी के साथ ऐसी जन्नतों की, जिसमें नेमत और आराम हमेशा क़ायम रहेगा । (सूरह् तौबा, 9:20,21)*

और जो अपने रब की रज़ामन्दी हासिल करने के लिए सब्र से जमे रहे और नमाज़ को क़ायम रखा और हम ने जो कुछ भी उनको अता किया था उसमें से खुले या छिपे तौर पर ख़र्च भी किया और किसी ने उनसे बुरा सुलूक किया तो उसे भलाई से टाल दिया, आख़िरत का घर ऐसे ही लोगों के लिए होगा । आख़िरत के घर में इनको हमेशा रहने के बाग़ात है, जिनमें ये दाख़िल होंगे---------------। (सूरह् रअद, 13:22, 23)*

27. मुझे हर हाल में किस पर भरोसा करना चाहिए ?

बेशक मेरा वली तो सिर्फ़ अल्लाह है, जिसने किताब नाज़िल फ़रमायी और वह इस्लाह (सुधार) करने वालों की हिमायत फ़रमाता है ।

(सूरह् आराफ़, 7:196)*

और अगर झगड़ा डालने के लिए शैतान तुम को उकसाने लगे तो उसकी शरारत से बचने के लिए अल्लाह का सहारा हासिल करो । यक़ीनन वही सुनने वाला और सब जानने वाला है । (सूरह् आराफ़, 7:200)

और आप यूँ दुआ करते रहो कि ऐ मेरे पालनहार, मैं पनाह माँगता हूँ कि मुझे शैतानों की छेड़-छाड़ से बचा कर अपनी हिफ़ाज़त में ले ले ! ऐ मेरे रब, मुझे तू इससे भी बचा ले कि वे मेरे क़रीब आएँ।

(सूरह् मोमिनून, 23:97, 98)*

जो लोग अल्लाह पर ईमान रखते हैं और अल्लाह पर भरोसा रखते हैं, ऐसे लोगों पर शैतान का कोई वार नहीं चल सकता। (सूरह् नह्ल, 16:99)*

28. मैं सही राह पाए हुए लोगों में कैसे शामिल हो सकता हूँ ?

अल्लाह की मस्जिदें तो उन लोगों से आबाद हैं, जो अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान लाएँ और नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात अदा करें और अल्लाह के सिवा किसी से न डरें, ये लोग उम्मीद रखें कि ये हिदायत (सही राह) पाने वालों में होंगे । (सूरह् तौबा, 9:18)

जो यह कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हम ईमान लाए; बस हमारे गुनाह बख़्श दे और हम को आग के अज़ाब से बचा ले । जो सब्र को ढाल बनाते हैं और सच बोलते हैं और अल्लाह का आदर-सम्मान करते हैं और रात के आख़िरी हिस्से में अल्लाह से अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं । (सूरह् आले-इमरान, 3:16,17)

मुशरिकीन से कट कर सिर्फ़ अल्लाह के हो जाओ, कभी भी अल्लाह के साथ किसी को शरीक न बताना ----------------। (सूरह् हज, 22:31)

और हर शख़्स जो ईमान में आकर नेक अमल किए जाएगा, तो ऐसे लोगों को हम अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमाएँगे ।(सूरह् अनकबूत, 29:9)

29. क्या मेरी नेकियाँ मेरी बुराइयों को मिटा देंगी ?

और दिन के दोनों सिरों पर नमाज़ क़ायम करो और रात के एक हिस्से में भी नमाज़ क़ायम करो । बेशक नेकियों में यह असर है कि बुराइयों को दूर कर देती हैं । यह बात उन सबको याद रखने की है, जो नसीहत को ध्यान में रखने वाले हैं । (सूरह् हूद, 11:114)

अगर बचते रहोगे उन बड़े-बड़े गुनाहों से जिनसे तुमको मना किया गया है; तो हम तुम्हारे दूसरे छोटे कुसूरों को माफ़ कर देंगे और जन्नत में तुम को इज़्ज़त-व-इकराम से दाख़िला अता फ़रमाएँगे । (सूरह् निसा, 4:31)

और जो लोग ईमान में आकर नेक अमल करते रहे, हम उनके गुनाहों को उनके नामा-ए-आमाल से मिटा देंगे और उनके नेक अमल का अच्छा बदला भी देंगे । (सूरह् अनकबूत, 29:7)

30. अल्लाह मेरी तौबा कब क़बूल नहीं करता ?

बेशक जो लोग ईमान लाने के बाद मुनकिर हुए, फिर अपने इंकार में बढ़ते चले गए उनकी तौबा हरगिज़ क़बूल नहीं होगी और ये बेराह लोग हैं । (सूरह् आले-इमरान, 3:90)

उनकी तौबा हरगिज़ तौबा नहीं कहलाती, जो बुरे काम करते ही रहते है; यहाँ तक कि उन में किसी के सामने मौत आ मौजूद होती है, तब कहने लगता है : अब मैं तौबा करता हूँ और उन की तौबा क़बूल नहीं जो कुफ़्र की हालत में मर जाते हैं । उन सब के लिए हमने दुख की मार तैयार कर रखी है । (सूरह् निसा, 4:18)

बेशक बात यह है कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया और ज़ुल्म किया, अल्लाह उन्हें कभी नहीं बख़्शेगा और उन को हिदायत का तरीक़ा भी नहीं बताएगा । (सूरह् निसा, 4:168)*

यह इसलिए कि तुम अल्लाह की आयतों को हँसी में उड़ाते रहते थे और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुम को धोखे में डाल रखा था । बस ये

लोग कभी भी आग से निकाले नहीं जाएँगे और उन की तौबा या उज़्र (बहाना) कुछ भी क़बूल न किया जाएगा । (सूरह् जासिया, 45:35)

31. अल्लाह मुझे कब हिदायत की राह नहीं दिखाता ?

ख़बरदार हो जाओ कि अल्लाह सिर्फ़ ख़ालिस दीन ही क़बूल करेगा । जो अल्लाह के सिवा दूसरों को अपना औलिया बना कर ये दलील देते हैं कि हम उन की इबादत नहीं करते, मगर ये लोग हम को अल्लाह के क़रीब पहुँचा कर अच्छा मुक़ाम दिला देंगे; ऐसे झूठे दावे करने वालों के इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला अल्लाह (आख़िरत में) ज़रूर फ़रमा देगा । सच्ची बात यह है कि अल्लाह किसी ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं दिया करता, जो झूठा हो और कट्टर काफ़िर भी हो ।

(सूरह् जुमर, 39:3)

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा 'कन्जुल ईमान' (REF: 927 नम्बर कुरआन मजीद में देखें, "हाँ, ख़ालिस अल्लाह ही की बन्दगी है और वे जिन्होंने उसके सिवा और वाली (मददगार) बना लिए, कहते हैं हम तो इन्हें सिर्फ़ इतनी बात के लिए पूजते हैं कि ये हमें अल्लाह के पास नज़दीक कर दें । अल्लाह उन में फ़ैसला कर देगा उस बात का जिसमें इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं । बेशक अल्लाह राह नहीं देता, उसे जो झूठा और बड़ा नाशुक्रा हो ।" (सूरह् जुमर, 39:3)

उस से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा, जो अल्लाह पर झूठ बाँधे, जब कि उसे इस्लाम की ओर दावत दी जा रही हो । ज़ालिम क़ौम को अल्लाह हिदायत की राह पर चलने की तौफीक नहीं देता । (सूरह् सफ़्फ़, 61:7)

32. ईमान वालों को किससे नहीं डरना चाहिए ?

दरअसल वह तो शैतान है जो अपने दोस्तों का डर बताता है, अगर तुम ईमान वाले हो तो उन से हरगिज़ मत डरो । डर और ख़ौफ़ तो बस मुझ से (यानी अल्लाह ही से) रखना । (सूरह् आले-इमरान, 3:175)

और हम (ईमान वालों) को यह भी हुक्म दिया गया है कि नमाज़ क़ायम रखो, सिर्फ़ अल्लाह से डरो और जान लो कि उसी की तरफ़ तुम सब को जमा कर लिया जाएगा । (सूरह् अनआम, 6:72)

33. मेरा सबसे बुरा साथी कौन है ?

और जो लोगों के दिखावे के लिए अपना माल ख़र्च करते हैं, अल्लाह पर और आख़िरत पर जिनका ईमान नहीं (ऐसे लोगों का साथी शैतान

है) और जिसका साथी शैतान हो गया तो समझ लो वह तो बहुत ही बुरा साथी है । (सूरह् निसा, 4:38)*

34. अल्लाह की नेमतें (सेहत, इल्म, माल आदि) मुझे और ज़्यादा कैसे मिल सकती है ?

और जब साफ़ सुना दिया तुम्हारे रब ने कि अगर शुक्र अदा करोगे तो मैं और भी ज़्यादा दूँगा, अगर तुम नाशुक्री करोगे तो याद रखना कि मेरा अज़ाब बहुत ही सख़्त है । (सूरह् इब्राहीम, 14:7)*

35. क्या मैं ज़बरदस्ती लोगों को इस्लाम की ओर बुला सकता हूँ ?

दीन के बारे में किसी से ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिए, नासमझी के मुक़ाबले में सही रास्ता खुल कर सामने आ गया है । जो शैतान को ठोकर मार दे और अल्लाह की बात मानने लगे, तो उसने बहुत मज़बूत सहारा थाम लिया, जो कभी टूटने वाला नहीं और अल्लाह ख़ूब सुनने वाला और जानने वाला है । (सूरह् अल-बक़रा, 2:256)*

36. जब कोई मेरे साथ ज़ुल्म या बुरा करे तो मैं क्या करूँ ?

अगर तुम ने जालिम के करतूत खोल सुनाए, तो हर्ज़ नहीं या छुपाए रख कर माफ़ कर दिया तो जानो कि अल्लाह बड़ी क़ुदरत रखने के बावजूद भी माफ़ करते रहता है । (सूरह् निसा, 4:149)*

और तुम को इज़ाजत दी जाती है कि तुम्हें जितना सताया गया हो तो उस तकलीफ़ पर उतना बदला ले सकते हो और अगर सब्र करो तो यह बेहतर बात होगी सब्र करने वालों के लिए ।

(सूरह् नह्ल, 16:126; सूरह् शूरा, 42:41,43)

37. मुझे बुरी बातों से कौन-सी चीज रोक सकती है ?

जो किताब आप पर आसमान से उतारी गई है उसका पढ़ना जारी रखो और नमाज़ क़ायम रखो । बेशक नमाज़ बेहयाई और बुरी बातों से रोकती है और अल्लाह के ज़िक्र को हर तरह बड़ाई है और जैसे भी काम तुम करते हो सब के बारे में अल्लाह को ख़ूब इल्म है ।

(सूरह् अनकबूत, 29:45)

38. मुझे किस दिन का डर रखना चाहिए ?

उस दिन से डरो जब अल्लाह के पास लौटाए जाओगे । फिर वहाँ हर शख़्स को, जो भी उसने कमाया होगा, पूरा बदला मिलेगा और ज़ुल्म किसी पर न होगा । (सूरह् अल-बक़रा, 2:281)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह का तकवा इख़्तियार करो और हर आदमी को देखना चाहिए कि उसने आने वाले कल के लिए आगे क्या भेजा है और डरो अल्लाह से । बेशक अल्लाह को उन तमाम कामों की ख़बर है जो तुम करते हो । (सूरह् हश्र, 59:18)

ऐ इंसानो ! अपने पालनहार से डरो । एक ख़ास वक़्त पर बड़ा भूचाल और ज़लज़ला अब आने ही वाला है, जो बहुत बड़ी भारी चीज़ होगा । (सूरह् हज, 22:1)

ऐ इंसानो ! उस दिन के आने से पहले अपने रब का ख़ौफ़ करो, जब कोई वालिद किसी चीज़ में अपनी औलाद को कुछ काम न आएगा और यह भी न होगा कि औलाद अपने वालिद के कुछ काम आ सके --------------। (सूरह् लुक़मान, 31:33)*

39. क्या मरने के बाद दुबारा जिन्दा होना है ?

क्या उन लोगों की निगाह नहीं पड़ी कि पहली बार पैदा करने के बाद अल्लाह उसी चीज़ को फ़ना कर के दूसरी बार किस शान से पैदा फ़रमा देता है ? बेशक अल्लाह के नज़दीक यह सब काम आसान है।

आप उन से कहो : ज़मीन में चल-फिर कर देखो कि अल्लाह ने कैसी अनगिनत मखलूक़ पैदा कर दी हैं । दूसरी बार भी वही पैदा फ़रमाएगा । बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है ।

(सूरह् अनकबूत, 29:19,20)*

उसकी कुदरत है कि जानदार को बेजान से बाहर लाता है और मरी सूखी ज़मीन को ज़िन्दा कर देना उसी की शान है । इसी तरह तुम भी मरने के बाद ज़मीन से निकाल खड़े किए जाओगे ।

(सूरह् रूम, 30:19; सूरह् हज, 22:5)*

40. क्या मैं आख़िरत में अल्लाह का दीदार कर सकूँगा ?

उस दिन बहुत-से चेहरे बड़े रौनक वाले होंगे । अपने रब की तरफ़ देखने वाले होंगे । (सूरह् क़ियामह, 75:22,23)

जो कोई अल्लाह की मुलाकात का उम्मीदवार हो तो उसे उसकी तैयारी में लग जाना चाहिए । बेशक अल्लाह की मुलाकात का वक़्त आकर रहेगा--------------------------------। (सूरह् अनकबूत, 29:5)

जो लोग हमारी मुलाकात की उम्मीद (यक़ीन) नहीं रखते और दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए और उसी पर मुतमइन हो बैठे, और जो लोग हमारी आयत से बेध्यान है (उन की खैरियत नहीं) । (सूरह् यूनुस, 10:7)

41. क्या मैं जन्नत में अपने रिश्तेदारों के साथ रहूँगा ?

आख़िरत के घर में इन के लिए हमेशा रहने के बाग़ात हैं, जिन में ये दाखिल होंगे; साथ में इन के बाप-दादा में से और इनके जोड़ों को, और इन की औलाद को भी जो नेक रहे हों, और जन्नत के हर दरवाज़े पर फ़रिश्ते इन के स्वागत को आएँगे । (सूरह् रअद, 13:23)

और जो लोग ईमान लाए और उन की औलाद ने ईमान के साथ उन का पालन किया तो हम उनकी औलाद को भी उन के साथ जन्नत में मिला देंगे; लेकिन किसी अमल में से कोई चीज़ कम करके हम दूसरे किसी को नहीं देने वाले, हर शख़्स अपने-अपने अमल के बदले गिरवी रह गया । (सूरह् तूर, 52:21)

42. मैं अपने घर वालों को किस चीज़ का हुक्म दूँ ?

अपने घर वालों को नमाज़ की ख़ूब ताकीद करते रहा करो और खुद भी इस पर जमे रहो । खाने का सवाल हम आप से नहीं करेंगे बल्कि रोज़ी रोटी तो हम आप को अता फ़रमाते रहेंगे और अंजाम तो उन्हीं लोगों का अच्छा होगा, जो परहेज़गार हैं । (सूरह् ताहा, 20:132)*

ऐ ईमान वालो ! अपने-आपको और अपने घर वालों को आग से बचाने की फ़िक्र करो, जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं । इस आग पर ऐसे कठोर और सख़्त मिज़ाज फ़रिश्ते नियुक्त हैं जो अल्लाह के किसी हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करते और इन्हें जो काम दिया जाता है, उसे ये बराबर करते हैं । (सूरह् तहरीम, 66:6)

43. मैं अल्लाह से अपने और अपने घरवालों के लिए कौन-सी दुआ माँगूं ?

ऐ हमारे परवरदिगार ! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ क़ायम रखने वाला बना दे; ऐ हमारे रब, मेरी दुआ क़ूबूल फ़रमा ।*

ऐ हमारे पालनहार ! जिस दिन हिसाब क़ायम हो, मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और मेरे माँ-बाप की और ईमान वालों की मग़फ़िरत फ़रमा ।
(सूरह् इब्राहीम, 14:40, 41)

उन में वे लोग क्या ख़ूब हैं जो कहते हैं : ऐ हमारे रब, हमको दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई अता फ़रमा और हमको आग के अज़ाब से बचा ले । (सूरह् अल-बक़रा, 2:201)

और उन की दुआ भी ख़ूब है जब अर्ज़ करते हैं कि ऐ पालनहार, हम को, हमारे जोड़ों और हमारी औलाद में आँखों की ठण्डक अता फ़रमा और कर हमको परहेज़गारों के आगे । (सूरह् फुरकान, 25:74)*

44. क्या क़ियामत में मेरा किया हुआ हर काम मुझे दिखाया जाएगा?

और हर इंसान के अच्छे-बुरे कामों को हमने लिख-लिखा कर लाज़िमी तौर पर उसके गले का हार बना रखा है और क़ियामत के दिन यह अमल का दफ़्तर किताब की शक्ल में हम पेश कर देंगे, इस तरह कि हर आदमी अपने किए-धरे को खुला हुआ पाएगा । फ़रमाया जाएगा कि अपना किया-कराया तू खुद ही पढ़ ले और आज अपने लिए तू हिसाब करने को खुद ही काफ़ी है । (सूरह् बनी-इसराईल, 17:13,14)

और तमाम इंसानों का आमालनामा खोल कर रखा जाएगा और तुम देखोगे कि मुजरिम लोग इस आमालनामे में जो कुछ दर्ज है उसके अन्देशे से मारे दहशत के फटे पड़ते होंगे और चीख उठेंगे कि हाय हमारी कमबख़्ती ! यह कैसा लिखा-लिखाया आमालनामा सामने आ गया। इस किताब में तो किसी छोटी और बड़ी चीज़ को नहीं छोड़ा गया, बल्कि सब को गिनती में लगा लिया गया और जो कुछ काम दुनिया में उन्होंने किया होगा, सब कुछ वहाँ मौजूद पाएँगे और तेरा रब किसी एक भी इंसान पर नाइन्साफ़ी या ज़ुल्म करने वाला नहीं ।
(सूरह् कहफ़, 18:49)

45. क्या क़ियामत में इंसान के जिस्म (अंगों) से पूछताछ की जाएगी?

उन के लिए वह दिन बड़ा सख़्त होगा जब उन की ज़बानें, हाथ, और पैर उन के ख़िलाफ़ गवाही देकर बताएँगे कि ये लोग क्या काम किया करते थे । (सूरह् नूर, 24:24)*

आज के दिन हम उन के मुँह को सील लगा कर बन्द कर देंगे और उनके हाथ हम से बात करेंगे और उनके पैर गवाही देंगे, उन सब कामों पर जो ये लोग किया करते थे । (सूरह् यासीन, 36:65)

यहाँ तक कि जब वे सब आग के सामने लाए जाएँगे, तब उन के कान, उनकी आँखें और उन की खालें भी उन के ख़िलाफ़ गवाही देंगी कि वे क्या कुछ किया करते थे । (सूरह् हा-मीम सजदा, 41:20)

46. क्या मोमिन को दीन की बात पर अमल करने से पहले मालूमात (तहक़ीक) करनी चाहिए ?

ऐ ईमान वालो ! अगर कोई बिन भरोसे की तबीयत वाला आदमी तुम्हारे पास कोई ख़बर ले आए, तो उस बात की जाँच कर लिया करो । कहीं ऐसा न हो कि बेख़बरी और नादानी में किसी क़ौम पर जा पड़ो । फिर तुम को अपने किए पर पछताना पड़े ।

(सूरह् हुजुरात, 49:6)*

और उनकी (अल्लाह के बन्दों की) शान यह भी है कि चाहे उन्हें उनके रब की आयत याद दिलाई जाए, तब भी उस पर अन्धे, बहरे होकर नहीं गिरते । (सूरह् फुरकान, 25:73)*

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF:927) कुरआन मजीद में देखें, "और वे कि जब कि उनके रब की आयतें याद दिलाई जाए तो उन पर बहरे, अन्धे होकर नहीं गिरते ।"

(सूरह् फुरकान, 25:73)

47. क्या इंसान को अल्लाह ने दुनिया में अपनी मर्ज़ी से राह पर चलने की आज़ादी दी है ?

इंसान के लिए हमने रास्ते की हिदायत में आज़ादी रखी । अब (जिसका जी चाहे) शुक्र की राह पकड़े या कुफ़्र की । (सूरह् दह्र, 76:3)

जो कोई भी नेकी करता है तो अपने भले के लिए और जो बुरा काम करने पर तुल गया तो उस का वबाल उसी के सर पर है और आप का रब बन्दों पर ज़ुल्म करना पसन्द नहीं करता ।

(सूरह् हा-मीम सजदा, 41:46)

48. क्या दीन पर अमल किए बिना भी दुनिया में कामयाबी मिल सकती है ?

जो शख़्स दुनिया की ज़िन्दगी बनाने की फ़िक्र में रहेगा और उसी की ज़ीनत और बनाव-सिंगार में लगा रहेगा, तो हम उसके कामों का बदला यहीं पूरा देंगे और ऐसे लोगों को यहाँ कोई कमी नहीं रहेगी । ऐसे लोगों को आख़िरत में सिवाय आग के अज़ाब के और कुछ हाथ न आएगा और जो आमाल इन्होंने दुनिया में किए, सब बरबाद हो जाएँगे और जो कुछ कर के आए, आख़िरत में सब के सब बातिल करार दिए जाएँगे । (सूरह् हूद, 11:15, 16)

जो लोग आख़िरत को नहीं मानते हम ने उन्हें ढील दी कि उनके आमाल उनकी निगाह में बहुत खुशनुमा दिखाई दें और अपनी नासमझी में यह लोग अन्धे होकर भटकते फिरते हैं । (सूरह् नम्ल, 27:4)*

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF:927) कुरआन मजीद में देखें, "वे जो आख़िरत पर यक़ीन नहीं लाते, हमने उनके कोतक ऐब (बुरे करतूत) उनकी निगाह में भले कर दिखाए ।" (सूरह् नम्ल, 27:4)

--------और जो कोई सिर्फ़ दुनिया में बदला पाने के इरादे से काम करेगा उसे दुनिया में से देंगे और जो कोई आख़िरत का सवाब चाहेगा तो उस को उस में से देंगे और हम शुक्र करने वालों को बहुत-बहुत देंगे । (सूरह् आले-इमरान, 3:145)

49. इंसान अपने गुनाहों पे दिलेर क्यों है ?

एक आदमी ऐसा है जिसके काले करतूत उसकी आँखों में बड़े खुशनुमा दिखाए जा रहे हैं, और वह भी उसे बहुत अच्छे काम समझ रहा है----------------------। (सूरह् फ़ातिर, 35:8)

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF:927) कुरआन मजीद में देखें, "तो क्या वह जिसकी निगाह में उसका बुरा काम आरास्ता (खुशनुमा) किया गया कि उसने उसे भला समझा---------------।" (सूरह् फ़ातिर, 35:8)

-------------शैतान ने उनके काले करतूत उनकी निगाहों में बहुत खुशनुमा बनाकर दिखाए थे और सही रास्ते से उनको दूर कर दिया

और लोग देखते-भालते और होशियार होने के बावजूद भी शैतान की फ़रेब में आ गए । (सूरह् अनकबूत, 29:38)

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) कुरआन मजीद में देखें, "और शैतान ने उनके कोतक (काले करतूत) उनकी निगाह में भले कर दिखाए और उन्हे राह से रोका----------।"

(सूरह् अनकबूत, 29:38)

इंकारी लोग इस भुलावे में न रहें; जो फुर्सत और ढील हम उन को दे रहे हैं, उनके हक़ में कुछ भला है; बल्कि हम तो ढील इसलिए दे रहे हैं कि ये लोग गुनाह में और बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले सकें । आख़िरकार ज़िल्लत करने वाला अज़ाब उन को हमेशा के लिए होता रहेगा । (सूरह् आले-इमरान, 3:178)

जिस दिन इंकारियों को आग पर पेश किया जाएगा और कहा जाएगा कि दुनिया की ज़िन्दगी में जो मज़े लेने थे, ले चुके और वहाँ जो फ़ायदा उठाना था, उठा लिया । बस आज तुम को ज़िल्लत और रूसवाई का अज़ाब दिया जाएगा कि तुम लोग ज़मीन में नाहक़ अपनी बड़ाई हाँकते थे, बड़ी अकड़ बता कर अपने गुनाहों पर दिलेर थे ।

(सूरह् अहक़ाफ़, 46:20)

50.क्या हमारा हर अच्छा व बुरा अमल लिखा जा रहा है ?

-------तुम जो कुछ दुनिया की ज़िन्दगी में करते थे हम उसे बराबर लिखवाते रहे । (सूरह् जासिया 45:29; सूरह् रअद, 13:11)

और इंसान के दाएँ और बाएँ तरफ़ हर बात को झपटने के लिए दो लिखने वाले ताक में लगे बैठे हैं । (सूरह् क़ाफ़, 50:17)*

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) कुरआन मजीद में देखें, "जब उससे लेते हैं दो लेने वाले, एक दाहिने बैठा और एक बाएँ ।" (सूरह् क़ाफ़, 50:17)

51. क्या अल्लाह को मेरे सभी कामों की ख़बर है ?

किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या छुपा के रखो अल्लाह के लिए सब बराबर है; तो सब चीज़ों के बारे में जानकारी रखता है। (सूरह् अहज़ाब, 33:54)

आसमानों और ज़मीन की छुपी हुई सब चीज़ें अल्लाह के इल्म में हैं। यक़ीन जानो कि सीनों के भेद की बात भी अल्लाह जानता है।

(सूरह् फ़ातिर, 35:38)

अल्लाह का फ़ैसला बिल्कुल हक़ है, अल्लाह के सिवा जिन से ये लोग दुआ करते हैं, उन को किसी चीज़ का इख़्तियार नहीं । बेशक तमाम बातों का सुनने वाला और हर चीज़ का देखने वाला अल्लाह है ।
(सूरह् मोमिन, 40:20)*

बेशक बात यह है कि तुम ज़ाहिर करो या छुपा लो, हर बात को अल्लाह ख़ूब जानता है । (सूरह् अम्बिया, 21:110)

52. क्या अल्लाह हमारे क़रीब है ?

इंसान को पैदा करने वाले सिर्फ़ हम हैं और उस के जी (मन) में जो ख़्यालात आते हैं वे सब हम को मालूम हैं और हम तो इंसान की गर्दन की (शह) रग से भी ज़्यादा क़रीब हैं । (सूरह् क़ाफ़, 50:16)

53. क्या हश्र (क़ियामत) के मैदान में मेरे बारे में पूछताछ दूसरों से की जाएगी या दूसरों को मेरी फ़िक्र होगी ?

वह गिरोह था जो गुज़र गया । जो कुछ उन्होंने कमाया बस उन को मिलेगा और तुम्हारा सिर्फ़ वह है जो तुम कमा के ले जाओगे (यानी अच्छे या बुरे अमल) और तुम से यह न पूछा जाएगा कि वे क्या करते थे । (सूरह् अल-बक़रा, 2:134,141)*

मुसलमानो सुनते हो ? तुमने दुनिया की ज़िन्दगी में ऐसे लोगों की तरफ़दारी में बहस व तकरार कर ली, लेकिन क़ियामत के दिन उनके झगड़े में कौन पड़ेगा ? कौन है जो इनकी वकालत कर सके ?
(सूरह् निसा, 4:109)*

आख़िरत का एक दिन ऐसा आएगा कि हर इंसान को अपनी जान की पड़ी होगी और हर शख़्स को अपने किए का पूरा बदला मिल जाएगा -----------------------। (सूरह् नह्ल, 16:111)*

ऐ इंसानो ! उस दिन के आने से पहले अपने रब का ख़ौफ़ करो, जब कोई वालिद किसी चीज़ में अपनी औलाद के कुछ काम न आएगा और यह भी न होगा कि औलाद अपने वालिद के कुछ काम आ सके । जो कुछ होगा अल्लाह के इन्साफ़ वाले वादे के मुताबिक़ और सच की बुनियाद पर होगा?------------------। (सूरह् लुक़मान, 31:33)*

और कोई दोस्त किसी दोस्त का हाल पूछने के लिए ख़ाली न होगा । दोस्त अपने दोस्त को सामने देखकर भी ख़्याल न करेगा, गुनहगार

उस दिन सब इस फ़िक्र में होंगे कि अज़ाब से छुटकारा पाने के लिए अपने बेटे दे डाले । (सूरह् मआरिज, 70:10,11)*

उस दिन भाई आपने भाई को छोड़ कर भागेगा; अपने माँ-बाप को छोड़ कर भागेगा; अपनी बीवी और बेटों को भी छोड़ कर फ़रार होना चाहेगा ।

हर आदमी को उस दिन अपनी-अपनी पड़ी होगी, दूसरे के काम (अंजाम) की उसको कुछ परवाह नहीं होगी । (सूरह् अ-ब-स, 80:34-37)

54. क्या अल्लाह के इकांरी लोगों के नेक आमाल आख़िरत में काम आएँगे ?

जिन्होंने अपने रब का इंकार किया उनकी मिसाल ऐसी है कि उनके आमाल राख का ढेर बन गए और एक सख़्त दिन की तेज़ आंधी ने इस राख को उड़ा दिया; जो कुछ इन्होंने कमाया था, वह कुछ इनके हाथ नहीं लगा----------------------। (सूरह् इब्राहीम, 14:18)*

जो लोग इंकारी हैं उनके आमाल के बेनतीजा होने की मिसाल ऐसी है, जैसे कि रेगिस्तानी मैदान में कोई प्यासा आदमी भटक कर रास्ता भूला हो और चटियल मैदान को दूर से धूप के सबब लहराता हुआ पानी ख़्याल करे और वहाँ जब पहुँच जाए तो पानी नाम की कोई चीज़ उसके हाथ न लगे; तड़पा-तड़पा कर जान निकालने का अल्लाह का फ़ैसला उस के सामने आ जावे और अल्लाह उसका हिसाब उसे वहीं पूरा कर दे और वाक़ई अल्लाह को हिसाब लेते कुछ भी देर नहीं लगती । (सूरह् नूर, 24:39)*

55. क्या शैतान इंसानों को बहकाने के लिए अल्लाह से मुहलत लेकर आया है ?

इब्लीस ने कहा : मुझे उस दिन तक छूट (मुहलत) दे जिस दिन लोग क़ब्रों से उठाए जाएँगे । रब ने फ़रमाया : जा तुझे मुहलत दी गई । उस ने कहा कि जब तूने मुझे रास्ते से भटका दिया, तो मैं ज़रूर बैठूँगा उन की ताक में तेरी सीधी राह पर । फिर उन पर आऊँगा आगे से और पीछे से और दाहिने से भी और बाएँ से भी और उन में से बहुतों को तू शुक्र करने वाला न पाएगा । (सूरह् आराफ़, 7:14-17)*

इबलीस मुहलत को पाकर बोला कि तेरी इज़्ज़त की क़सम मैं इन सब को गुमराह करके छोड़ूँगा । मगर तेरे ख़ालिस बन्दे ही मेरे वार से बच

सकेंगे । रब ने फ़रमाया कि हाँ ठीक है और मैं भी ठीक कहता हूँ । फिर मैं तुझ को और उन में से जो तेरी राह चलेंगे, उन सब को इकट्ठा जहन्नम में भर दूँगा। (सूरह् साद, 38:82-85;* सूरह् हिज्र, 15:36-40)*

56. क्या शैतान भी अल्लाह से डरता है ?

इनकी हालत शैतान की तरह है कि इंसान को ख़ूब उकसाता है कि इंकार करने वाला हो जा, जैसे ही आदमी काफ़िर (इंकारी) बना, शैतान यह कह कर उसकी हवा निकाल देता है कि मैं तुझ से अलग हूँ, तेरा मेरा कोई सम्बन्ध (वास्ता) नहीं; क्योंकि मैं तो अल्लाह रब्बुल-आलमीन का ख़ौफ़ (डर) रखता हूँ । (सूरह् हश्र, 59:16)

और जब फ़ैसला चुका (कर) दिया जाएगा, तो शैतान बोलेगा कि बेशक अल्लाह ने जो तुमसे वादा किया था, वह सच्चा वादा था और मैंने जो वादे किए थे वे सब के सब झूठे थे । मेरा तुम पर कोई ज़ोर तो चलता नहीं था और तुम पर मेरी कुछ हुकूमत तो थी नहीं, बस इतनी बात थी कि मैंने तुम को बुलाया, दावत दी और तुमने उसे क़ुबूल कर ली । अब आज (आख़िरत में) मुझ पर लानत मलामत न करो; बल्कि अपने आप पर लानत करो ---------------।(सूरह् इब्राहीम, 14:22)

*16. इस मज़मून को (8) सूरह् अनफ़ाल, आयत 48 में देखा जा सकता है । शैतान अपनी ग़रज़ से और इंसानों की दुश्मनी के कारण लाखों लोगों को कुफ़्र (नास्तिकता) और शिर्क (अनेकेश्वरवाद) की ओर उकसाता है । किन्तु स्वयं अल्लाह से डरता है, जो तमाम सृष्टि का पालनकर्ता है। दरअसल इंसान की यह हालत है कि कुफ़्र में जब गिर पड़ा तो अपने उस्ताद शैतान से भी दो क़दम आगर चल पड़ता है । तब उस्ताद पीछे रहा और चेला कुफ़्र में आग बढ़ गया। शैतान को भी शायद शर्मिन्दगी होती होगी कि कुफ़्र में ये शार्गिद तो मेरे भी चचा निकले ।

57. क्या क़ुरआन में हर इख़्तिलाफ़ का जवाब मौजूद है ?

और हमने इस क़ुरआन में हर पहलू पर नसीहत का बयान जारी फ़रमाया, ताकि उनको अच्छी तरह याद रहे; मगर उनका यह हाल है कि नफ़रत में और ज़्यादा बिदकते हैं । (सूरह् बनी-इसराईल, 17:41)

और हम ने इंसानों के लिए इस क़ुरआन में हर तरह की मिसाल बयान करके बात ठीक तरीक़े से बता दी; मगर अक्सर लोगों का हाल यह है कि बग़ैर इंकार किए उन से रहा न गया । (सूरह् बनी-इसराईल, 17:89)

बहुत-सी बातों में झगड़े बहस करना इंसान की आदत है, इसी लिए हमने कुरआन में इंसानों के लिए हर क़िस्म की मिसाल खोल-खोल कर बयान फ़रमा दी । (सूरह् कहफ़, 18:54)

और हमने यह किताब आप पर नाज़िल की है । इस के ज़रिए आप इन के इख़्तिलाफ़ को साफ़-साफ़ बयान कर दें और इसी किताब से ईमान वालों को हिदायत और रहमत नसीब होगी । (सूरह् नह्ल, 16:64)

58. क्या हमसे आख़िरत में कुरआन के बारे में पूछताछ होगी ?

और बेशक यह कुरआन आप के लिए और आपकी क़ौम के लिए नसीहतनामा है और तुम सब से इसके बारे में पूछा जाएगा ।

(सूरह् ज़ुख़रूफ़, 43:44)

59. क्या हम कुरआन को अरबी के अलावा अपनी जबान में तर्जमा से पढ़ सकते हैं ?

और हमने हर रसूल को उसकी क़ौम की बोली में पैग़ाम देकर भेजा, ताकि लोगों के सामने बात खुलकर आ जाए । (सूरह् इब्राहीम, 14:4)*

*4. मालूम हुआ कि हर नबी अपनी क़ौम की ज़बान में अल्लाह का कलाम सुनाता रहा, ताकि लोग अपने मालिक के हुक्मों को जान लें। आख़िरी नबी (स.अ.व.स.) के लाए हुए कलाम पाक का, जो अरबी ज़बान में है, इस उम्मत के उलमा-ए-किराम ने दुनिया क़रीब-क़रीब तमाम ज़बानों में तर्जमा कर दिया; ताकि सब ज़बान वाले समझ सकें। तर्जमे से मतलब समझ में आता है और अरबी मतन की हिफ़ाज़त असूल है; ताकि कलामे-इलाही में कहीं फ़र्क़ न आवे । असूल अरबी में कुरआन का नमाज़ में पढ़ना और नमाज़ के बाहर नाज़िरा कुरआन मजीद (यानी कुरआन मजीद देखकर) असूल अरबी में पढ़ना बहुत ज़रूरी है । इस उम्मत में हिफ़्ज़े-कुरआन का भी बड़ा मोअजेज़ा है । फ़ज़ीलत तो इस में है कि हम थोड़ी-बहुत अरबी ज़बान ज़रूर सीख लें; ताकि मतलब निगाह में रहे । बाक़ी तर्जमा पढ़ने की आदत बनी रहने से हर वक़्त कुरआन मजीद की आयात पर ध्यान लगा रहेगा और मालिक के हुक्मों की ग़फ़लत से बन्दा महफ़ूज़ रहेगा । आयत का दिल पर असर होगा और नमाज़ में जी लगेगा । यह याद रहे कि नमाज़ सिर्फ़ अरबी ज़बान में ही पढ़नी चाहिए । तर्जमे के शौक़ और जोश में कोई अपनी ज़बान में नमाज़ में कुरआन का तर्जमा पढ़े या नमाज़ अपनी ज़बान में पढ़े (यानी ग़ैर-अरबी में) तो अदा नहीं होगी, बल्कि सारी उम्मत से कट कर दूर जा पड़ेगा। अरबी ज़बान में तमाम दुनिया के ईमान वाले नमाज़ अदा करते हैं । यह अल्लाह की बड़ी नेअमत है कि जहां जिस मुल्क में हम जाएं नमाज़ सिर्फ़ एक ही ज़बान में मिलेगी ।

60. क्या कोई ऐसा भी काम है जिसे करने से खुदा मुझे आख़िरत में बिल्कुल माफ़ न करे ?

अल्लाह कभी ऐसे को नहीं बख़्शेगा जो उसके साथ किसी को शरीक करेगा और उसके सिवा जिसको चाहेगा माफ़ कर देगा और जिस किसी ने शरीक ठहराया अल्लाह के साथ उसने बड़ा तूफ़ान बाँधा ।

(सूरह् निसा, 4:48,116)*

बेशक आप (सल्ल०) की तरफ़ और आप से पहले भेजे गए नबियों की तरफ़ भी यह वह्य कर दी गई थी कि अगर तुम ने शिर्क किया तो तुम्हारे अमल बर्बाद कर दिए जाएँगे और तुम भी उन लोगों में से हो जाओगे, जो अपना नुक़सान अपने-आप कर बैठे ।

(सूरह् जुमर, 39:65)*

61. क्या कोई मुसलमान भी शिर्क करता है ?

और लोगों की अकसरियत (बड़ी तादाद) का यह हाल है कि अल्लाह पर ईमान भी रखते हैं और साथ में शिर्क भी करते हैं ।

(सूरह् यूसुफ़, 12:106)

------------------बोलेंगे : ऐ हमारे रब, तू ने हम को दो बार मौत दी और दो मरतबा ज़िन्दा कर दिखाया । अब हम अपने गुनाहों का इक़रार करते हैं । क्या अब हमारे लिए यहाँ से निकलने का कोई रास्ता है ? कहा जाएगा : हरगिज़ नहीं, इसलिए कि जब एक अकेले अल्लाह से दुआ करने की बात कही जाती थी तो तुम ने विरोध किया था और जब कभी अल्लाह के साथ किसी को शरीक किया तो तुम ने उसे क़बूल कर लिया । बस आज तो अल्लाह आलीशान जो सब से बड़ा है, उस का हुक्म हो चुका । (सूरह् मोमिन, 40:11,12)

*40. 11 व 12. नास्तिक और काफ़िर तो अल्लाह का इंकार करके चुप हो जाता है। किसी ईमानी अमल से उसको कुछ लेना-देना नहीं । लेकिन जो लोग शिर्क करते हैं, वे जहाँ ज़रूरत पड़ती है अल्लाह पर भी ईमान रखते हैं और जहाँ उन को शिर्क पसन्द पड़ गया, वहां शिर्क से काम चलाते हैं । इसीलिए सूरह् युसूफ़ आयत 106 में कहा कि लोगों की अकसरियत का यह हाल है कि अल्लाह पर ईमान भी रखते हैं और साथ में शिर्क भी करते हैं ।

नोट : शिर्क क्या होता है और कितनी क़िस्में होती हैं, इन तमाम बातों की जानकारी के लिए 'शिर्क' (क़ुरआन की रौशनी में) किताब पढ़ें या तौहीद के मसायल पढ़ें, ई मेल के ज़रिए फ़्री में पाने के लिए ईमेल करें : paighamEaman@yahoo.com

62. क्या अल्लाह का कोई बेटी-बेटा या कोई काम में साझेदार है ?

------- लोग जिन्नातों को अल्लाह का साझीदार बताते हैं, जबकि जिन्नातों को पैदा करने वाला अल्लाह है, और उन्होंने अल्लाह के लिए बेटे-बेटियाँ बेजाने-बूझे फाड़ निकाले । अल्लाह तो हर ऐब से पाक है-------------------------। (सूरह् अनआम, 6:101)*

-------------------------कोई उस का बेटा कैसे हो सकता है ? जबकि उस की बीवी ही नहीं; उस ने हर चीज़ को पैदा कर दिया और सब चीज़ों की उसे ख़बर है । (सूरह् अनआम, 6:102)*

यहूदी लोग बकवास करते हैं कि उज़ैर (अलै०) अल्लाह के बेटे हैं और ईसाई लोग बकने लगे कि ईसा मसीह (अलै०) अल्लाह के बेटे हैं, ये इनके मुँह की ख़ुराफ़ाती बातें हैं, पहले के काफ़िरों की नक़्ल में उन के सुर में अपनी आवाज़ मिला रहे हैं । अल्लाह की मार पड़ेगी उन पर ! ये कैसी ख़ब्ती (वाली बातें) बनाए जा रहे हैं ।

(सूरह् तौबा, 9:30)

उन की बकवास है कि अल्लाह को औलाद वाला बताते हैं । किसी को औलाद बना लेना रहमान की शान के ख़िलाफ़ बात है । आसमानों और ज़मीन में हर एक को उस के दरबार में बन्दे की हैसियत से हाज़िरी देनी है । (सूरह् मरयम, 19:88, 92, 93)

आप (सल्ल०) फ़रमा दो कि रहमान का कोई बेटा होता तो सब से पहले मैं इबादत करता । (सूरह् ज़ुख़रूफ़, 43:81)

और हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है, किसी को उसने अपनी बीवी नहीं बनाया और न किसी को अपना बेटा बनाया । हम में (यानी इंसानों में) बहुत-से बेवकूफ़ हैं, जो अल्लाह के बारे में बनावटी बातें कहा करते हैं । (सूरह् जिन्न, 72:3,4)

कहो : अल्लाह एक है, अकेला है । उसको किसी की हाज़त (ज़रूरत) नहीं; न उसकी कोई औलाद है, न वह किसी की औलाद है; और उसके बराबर का (उस जैसा) कोई नहीं । (सूरह् इख़लास, 112:1-4)

63. अल्लाह के अलावा दुआ में किसी और को पुकार सकते हैं ?

क्या ऐसों को अल्लाह का शरीक बनाते हो, जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते, बल्कि ख़ुद ही पैदा किए जाते हैं । और वे इनकी किसी

तरह मदद भी नहीं कर सकते और बेचारे ख़ुद अपनी मदद भी नहीं कर सकते । अगर तुम इनको रास्ते पर बुलाओ तो तुम्हारे साथ भी नहीं आ सकते; फिर इनसे दुआ करो या न करो, पुकारो या चुप रहो दोनों बराबर हैं । अल्लाह के सिवा जिसे भी पुकारोगे, वे तुम्हारे ही जैसे बन्दे हैं --------------------------। (सूरह् आराफ़, 7:191-194)

----------------------------जान लो, अल्लाह ही तुम्हारा रब है । बादशाही उसी के लिए है और जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, उनको तो खजूर की गुठली के छिलके बराबर भी इख़्तियार हासिल नहीं । अगर तुम उनसे दुआ करते हो तो वे तुम्हारी दुआ को सुनते नहीं और अगर सुन लें तो वे तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकते और क़ियामत के दिन तुम्हारे शिर्क का इंकार कर देंगे और हर तरह की ख़बर रखने वाले अल्लाह की तरह दूसरा कोई तुमको असल (मूल) घटना की ख़बर नहीं दे सकता । (सूरह् फ़ातिर, 35:13,14)*

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरेलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) कुरआन मजीद में देखें, "---------------अल्लाह तुम्हारा रब उसी की बादशाही है और उसके सिवा जिन्हें तुम पुकारते हो दाना खुरमा (खजूर) के छिलके तक के मालिक नहीं; तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार न सुनें और बिलफ़र्ज़ सुन भी लें तो तुम्हारी हाज़तरवां (ज़रूरत पूरी) न कर सकें और क़ियामत के दिन वे तुम्हारे शिर्क से मुनकिर (इंकारी) होंगे और तुझे कोई न बताएगा उस बताने वाले (अल्लाह) की तरह ।" (सूरह् फ़ातिर, 35:13,14)

अब हर एक पर साबित हो गया कि अल्लाह बरहक़ है और अल्लाह के सिवा किसी को भी ये लोग दुआ में पुकारें तो यह पुकार झूठी और बातिल है । बस अल्लाह ही सब से बुलन्द और बड़ा है ।

(सूरह् हज, 22:62; 22:73)

नोट : इस आयत को भी इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरेलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) कुरआन मजीद में देखें, "ये इसलिए कि अल्लाह ही हक़ है और इसके सिवा जिसे भी पुकारते हैं वही बातिल है और इसलिए अल्लाह ही बुलन्दी बड़ाई वाला है ।" (सूरह् हज, 22:62)

और उस से बढ़कर गुमराह कौन होगा, जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को पुकारे; जो क़ियामत तक उस की दुआ का न जवाब दे सके, और उस की दुआ से बेख़बर भी हो । और जब तमाम इंसानों

को हश्र के दिन जमा कर लिया जाएगा; तो ये उन के दुश्मन हो जाएँगे, और उन की दुआ-इबादत सब का इंकार कर देंगे ।

(सूरह् अहक़ाफ़, 46:5,6)

नोट : इस आयत को भी इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) क़ुरआन मजीद में देखें, "और उस से बढ़कर गुमराह कौन जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पुकारे, जो क़ियामत तक उसकी न सुने और उन्हें उनकी दुआ की ख़बर तक नहीं और जब लोगों का (क़ियामत में) हश्र होगा वे उनके दुश्मन होंगे, और उनसे मुनकिर होंगे ।

(सूरह् अहक़ाफ, 46:5,6)

ये लोग जिन्हें (मन की मुराद को पूरी करने वाला समझकर) पुकारते हैं । उनका तो हाल यह रहा था कि वे ख़ुद अपने रब के हुज़ूर ज़्यादा क़रीब होने के लिए वसीला (ज़रिया, वास्ता) तलाश करते रहे और उसकी रहमत के उम्मीदवार बने रहे और उसके अज़ाब का ख़ौफ़ रखते थे ----------। (सूरह् बनी-इसराईल 17:57)*

नोट : इस आयत को भी इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) क़ुरआन मजीद में देखें, "वे मक़बूल बन्दे जिन्हें ये पुकारते हैं, वे ख़ुद ही अपने रब की तरफ़ वसीला (ज़रिया) ढूँढ़ते हैं कि उनमें कौन ज़्यादा मुक़र्रब (ख़ास) हैं, उसकी रहमत की उम्मीद रखते हैं और उसके अज़ाब से डरते हैं । बेशक तुम्हारे रब का अज़ाब डर की चीज़ है ।" (सूरह् बनी-इसराईल, 17:57)*

* लोग इस वसीला से ग़लत मतलब लेते हैं, जो पैग़म्बर ने नहीं बताए और न अल्लाह के नबी और सहाबा ने बताए । यानी कोई तो कंकरों को पूजने लगा और उसका वसीला (सहारा, मदद) पकड़ा और क़ब्र में जो है उससे मदद मांगने लगा; कोई कुछ और करने लगा । वसीला का मतलब है वास्ता, ज़रिया, नज़दीकी हासिल करना । इसके लिए सबसे ज़्यादा असर करने वाला रास्ता अल्लाह को सजदा करना है । क़ुरआन में फ़रमाया कि सजदा करते रहो और नज़दीकी हासिल करते रहो । देखें : सूरह् 96:19 ।

हमारे यहां के कुछ मुशरिक क़ब्रों को सजदा करने लगे और उल्टे अल्लाह के ग़ज़ब में घिर गए । यह आयत भी जिहाद यानी हर तरह की मेहनत करने की तरफ़ इशारा कर रही है । फिर नादान लोगों को क्या हुआ कि क़ब्रपरस्ती, ताज़ियादारी और ऐसे बहुत-से शिर्क और बिदआत, जो आग में जाने का वसीला तो बन सकते हैं, उनको ये भले आदमी अपनी नादानी से हलकट क़िस्म के जाहिल मज़हबी चौधरियों के फन्दे में फंस कर जो पेट भरने के लिए दीन (मज़हब) बेचते हैं उनके धोखे में आकर नजात (मुक्ति) का वसीला समझ बैठे हैं । अगर नेक अमल के सिवा कोई आदमी वसीला हो सकता है तो फिर सब का वसीला पैग़म्बर (स.अ.व.स.) हैं । चाहिए कि फिर हज़रत

मुहम्मद (स.अ.व.स.) ही का वसीला हर कोई पकड़े और जैसा अल्लाह के रसूल ने ईमान और अमल बताया वैसे ही करते रहें । इसी में नजात है । बस वसीला हर रोज़ ईमान और नेक आमाल में रहने से मिलता रहेगा वरना नहीं । मुसलमानों को यह भी याद रखना चाहिए कि इस आयत का मतलब सहाबा-ए-किराम में से और किसी बुजुर्गानि-दीन में से किसी ने भी यह नहीं समझा कि किसी क़ब्र पर वसीले की दुहाई देने से काम बनेगा, बल्कि उनमें से हर एक ईमान और नेक अमल करने के लिए दौड़ लगाता हुआ नज़र आया ।

64. वे लोग क्या क़ियामत में हमसे मिलेंगे जिन्हें हम अल्लाह के साथ मुसीबत में पुकारते हैं ?

वह दिन भी क्या ख़ूब होगा जब अल्लाह फ़रमाएगा कि जिन शरीकों पर तुम को भरोसा था और तुमको उन पर बड़ा घमंड था, ज़रा उनको बुला लाओ; तो ये लोग आवाज़ें देंगे, मगर कहीं से उनको जवाब न मिलेगा और उनके दरमियान हम हलाकत और बरबादी की खाई सामने कर देंगे । (सूरह् कहफ़, 18:52)*

कितना ग़लत हिसाब लगाया था उन काफ़िरों ने कि मेरे मुक़ाबले में मेरे बन्दों को अपना कारसाज़ मान कर आए (और यहाँ आकर बात उल्टी पड़ी); यक़ीनन ऐसे मुनकिरों की मेहमानी के लिए हमने जहन्नम को तैयार कर रखा है । (सूरह् कहफ़, 18:102)*

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) कुरआन मजीद में देखें, "तो क्या काफ़िर ये समझते हैं कि मेरे बन्दों को मेरे सिवा हिमायती बना लेंगे; बेशक हमने काफ़िरों की मेहमानी को जहन्नम तैयार कर रखी है ।" (सूरह् कहफ़, 18:102)

और तमाम के तमाम (इंसान) क़ियामत में अल्लाह के पास अकेले हाज़िर होंगे । (सूरह् मरयम, 19:95)*

(मौत की बाद उन की पेशी पर रब फ़रमाएगा) तुम अकेले ही आ गए, जैसे हम ने तुम को पहली बार पैदा किया था और जो कुछ तुम को हम ने दिया था वह भी अपनी पीठ पीछे छोड़ कर आ गए और तुम्हारे साथ वह सिफ़ारिश करने वाले भी हम को नज़र नहीं आ रहे हैं, जिन के बारे में तुम को बड़ा घमंड था और दावा था कि यह हमारे दरबार में तुम्हारी सिफ़ारिश करेंगे, आज तो तुम्हारे रिश्ते नाते भी सब कट गए और जिन पर दावा किए हुए थे वह सब आज ग़ायब हो गए ।

(सूरह् अनआम, 6:95;* सूरह् निसा, 4:109;* सूरह् मोमिन, 40:47,48)

65. क्या अल्लाह क़ियामत में उन हस्तियों से पूछताछ करेगा, जिन्हें लोग दुनिया में अल्लाह के साथ मुसीबत में पुकारते थे ?

और जिस दिन वह इन सब को जमा कर लेगा और जिन को ये लोग अल्लाह के सिवा पूजते थे उन को भी जमा करके पूछेगा कि क्या मेरे बन्दों को तुम ने गुमराह कर दिया था या ये लोग खुद सीधी राह छोड़ कर बहक गए थे ।

वे कहेंगे : अल्लाह, तू बेऐब है, पाक है; भला हमारी यह हिम्मत कैसे हो सकती थी कि तेरे सिवा हम दूसरों को औलिया बना कर उनको गुमराह करते; लेकिन जब तू ने उन को और उनके बाप-दादों को सामाने-ज़िन्दगी अता फ़रमाया तो ये नाशुक्रे तेरी नसीहत को भूल-भाल कर नज़र अन्दाज़ कर बैठे और अब हलाक व बरबाद होने वाली क़ौम बन कर हश्र के मैदान में बेसहारा खड़े हैं ।

जो तुम बकवास करते थे, तुम्हारे शरीकों ने तुम्हारे मुँह पर झूठला दिया । अब आज तुम ऐसे बेसहारा हो कि अज़ाब को टाल भी नहीं सकते, यहाँ से सरक भी नहीं सकते और कोई तुम्हारी मदद को भी आने वाला नहीं और तुम में जो सितमगर ज़ालिम होगा, उसे तो हम और भी बड़ा अज़ाब देंगे । (सूरह् फ़ुरकान, 25:17-19)*

और हश्र के दिन हम इन सब को जमा करेंगे, फिर मुशरिकों से हम कहेंगे कि तुम और तुम्हारे बनाए हुए शरीक अपनी अपनी जगह खड़े रहो (फिर हम उनको एक-दूसरे के आमने सामने कर देंगे); तब इनमें फूट पड़ जाएगी और इनके बनाए शरीक बोल उठेंगे : कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम लोग हमारी इबादत में लगे थे ?

अगर तुमने हमारे पीछे ऐसा किया तो हमारे तुम्हारे दरमियान अल्लाह की गवाही काफ़ी है कि हम तो तुम्हारी इबादत से ग़ाफ़िल बेख़बर पड़े थे । (सूरह् यूनुस, 10:28,29)*

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्ज़ुल ईमान (REF: 927) क़ुरआन मजीद में देखें, "और जिस दिन हम उन सब को उठाएँगे, फिर अल्लाह मुशरिकों से फ़रमाएगा अपनी जगह (खड़े) रहो तुम और तुम्हारे शरीक तो हम उन्हें मुसलमानों से जुदा कर देंगे और उनके शरीक उनसे कहेंगे : तुम हमें कब पूजते थे; तो अल्लाह गवाह काफ़ी है । हम में और तुम में कि हमें तुम्हारे पूजने की ख़बर भी न थी ।" (सूरह् यूनुस, 10:28,29)

“काफ़ी है अल्लाह सब की हाज़त रवाई के लिए
नबी, पैग़म्बर, इमाम, वली फ़क़त रहनुमाई के लिए
पढ़ते हो नमाज़ में इय्या-कनअ़बुदु वइय्या-कनस्तअ़ीन
फिरते हो फिर भी दर-बदर मुश्किल कुशाई के लिए।”

*28. जितने मुशरिक हैं, अपनी जिहालत और ज़िद से अल्लाह के शरीक व साझी बनाते हैं । दरअस्ल अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त का कोई शरीक नहीं; कोई साझी नहीं । हश्र के दिन मुशरिक लोग जिन को अल्लाह का शरीक बनाते थे, वे लोग मुशरिकीन के सामने कर दिए जाएंगे । जब इनमें आपस में ख़ूब हुज्जत, बहस और तक़रार होगी : तुम हमारी बन्दगी कैसे करते थे; हम को तो मालूम ही नहीं कि तुम हमारे पीछे हमारे नाम से क्या कुछ करते थे । हम तो इन सब बातों से बेख़बर थे। मालूक हुआ जो लोग किसी बुत को या साहिबे-क़ब्र को अपनी मदद के लिए पुकारते थे, क़ियामत के दिन ये लोग पुकारने वालों के दुश्मन हो जाएंगे ।

*29. मालूम होता है, ये नेक लोग होंगे जिनकी क़ब्रों को लोगों ने इबादतगाह बनाया था और उनको हाजत पूरी करने वाले, मुश्किल आसान करने वाले माना और अपने ख़याल में उनको मदद के लिए पुकारते हैं, जबकि ये साहिबे-क़ब्र नेक लोग क़ियामत के दिन कहेंगे कि अल्लाह गवाह है, हम तो महज़ बेख़बर अपनी क़ब्रों में पड़े थे । तुम्हारी दुआ और पुकार की हम को कुछ ख़बर ही नहीं थी कि तुमने हमारे पीछे क्या कुछ किया और हमारे नाम से ऐसे काम किए जो ख़ुदा की बन्दगी के थे और मुफ़्त में हमको बदनाम किया कि आज हश्र दिन तुम्हारे मुक़दमे में हमको तलब किया गया, जबकि हम यह जानते ही न थे कि तुम कौन थे और क्या कुछ करते रहे थे ।

और जब ये मुशरिक लोग अपने शरीकों को वहाँ देख लेंगे, तो कहेंगे कि ऐ हमारे रब, यही वे शरीक हैं जिन को हम तुझे छोड़ कर पुकारते थे । तब ये शरीक लोग इन की बात इन के मुँह पर मार कर कहेंगे कि तुम लोग झूठे हो । (सूरह् नम्ल, 16:86)*

नोट : इस आयत को भी इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्ज़ुल ईमान (REF: 927) क़ुरआन मजीद में देखें, “और शिर्क करने वाले जब अपने शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे : ऐ हमारे रब, ये हैं हमारे शरीक कि हम तेरे सिवा पूजते थे, तो वे उन पर बात पलट कर फेंकेंगे कि तुम बेशक झूठे हो ।” (सूरह् नम्ल, 16:86)

*86. मैदान हश्र का भरा पड़ा है । अल्लाह के हुज़ूर तमाम अगले-पिछले हिसाब के लिए खड़े हैं । दुनिया में जो लोग अल्लाह के साथ उसके बन्दों को शरीक बनाते थे, जैसे नबी, रसूल, औलिया वग़ैरह वे बन्दे यहां उन्हें मिल जाएंगे तब वे चींख़ पड़ेंगे कि या अल्लाह ये तो वही लोग हैं जिन को हम तुझे छोड़ कर दुआ के लिए बुलाते थे । उनमें ये साहब हमारे हाजतरवा थे और वे हमारे मुश्किल कुशा थे, जैसा हम मानते थे। तब उनके सामने ख़ुदा के दो नेक बन्दे जिनकी दुनिया में इताअत नहीं की गई, लेकिन

मरने के बाद किसी ने उनकी क़ब्र की पूजा की, किसी ने उनकी तस्वीर बनाई, किसी ने पत्थर में उनकी सूरत उतारकर उनको सजदा किया, दुआ मांगी थी, वह मुशरिकों पर फिटकार बरसाएंगे और बिगड़ कर कहेंगे कि बेईमानो ! तुम झूठे हो, मक्कार हो । हमने कब कहा था कि तुम अल्लाह के सिवा हम से दुआ करना । उस वक़्त मुशरिकों की ज़िल्लत देख कर शैतान भी कांप उठेगा ।

और क़ियामत के दिन अल्लाह सब को जमा करेगा तब फ़रिश्तों से भी पूछेगा : क्या ये लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे ?

(सूरह् सबा, 34:40)

66. क्या किसी की सिफ़ारिश क़ियामत में काम आ सकती है ?

ख़बरदार हो जाओ कि अल्लाह सिर्फ़ ख़ालिस दीन ही क़बूल करेगा, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को अपना औलिया बना कर ये दलील देते हैं कि हम उन की इबादत नहीं करते, मगर ये लोग हम को अल्लाह के क़रीब पहुँचा कर अच्छा मुक़ाम दिला देंगे, ऐसे झूठे दावे करने वालों के इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला अल्लाह (आख़िरत में) ज़रूर फ़रमा देगा । सच्ची बात यह है कि अल्लाह किसी ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं दिया करता, जो झूठा हो और कट्टर काफ़िर भी हो ।

(सूरह् जुमर, 39:3)

क्या उन्होंने अल्लाह के सिवा अपने लिए सिफ़ारिश करने वाले बना रखे हैं ? आप कह दो : अगर ये लोग किसी चीज़ के मालिक न हों और उन को मामले की सही समझ न हो तब भी ?

आप कह दो : सिफ़ारिश के तमाम इख़्तियारात सिर्फ़ अल्लाह के पास हैं आसमानों और ज़मीन में हर जगह बादशाही उसी के लिए है; फिर तुम सब को लौट कर जाना भी उसी के पास है ।

(सूरह् जुमर, 39:43,44)

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) क़ुरआन मजीद में देखें, "क्या उन्होंने अल्लाह के मुक़ाबिल कुछ सिफ़ारिशी बना रखे हैं ? तुम फ़रमाओ : क्या अगरचे वे किसी चीज़ के मालिक न हों और न अ़क़्ल रखें ।तुम फ़रमाओ : शफ़ाअत तो सब अल्लाह के हाथ में है; उसी के लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाही, फिर तुम्हें उसी की तरफ़ पलटना है ।" (सूरह् जुमर, 39:43, 44)

और अल्लाह के सिवा इबादत में लगे ऐसों की, जो न तो किसी को नुक़सान पहुँचाने की ताकत रखते हैं, और नफ़ा भी नहीं दिला सकते,

फिर भी घमंड में बोलते हैं कि ये सब अल्लाह के यहाँ हमारी शफ़ाअत (सिफ़ारिश) के लिए हैं, आप इन से कह दो कि अच्छा तुम अल्लाह को उस बात की ख़बर देने लगे? जो उसे मालूम नहीं और उस बात का आसमानों और ज़मीन में कहीं वजूद नहीं, कहीं पता नहीं, अल्लाह उनके शिर्क से पाक है और बहुत बुलंद व महान है।

(सूरह् यूनुस, 10:18)

नोट : इस आयत को भी इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरेलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) कुरआन मजीद में देखें, "और अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ को पूजते हैं, जो उनका कुछ भला न करे और कहते हैं कि ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं । तुम फ़रमाओ : क्या अल्लाह को वह बात बताते हो जो उसके इल्म में, न आसमानों में है, न ज़मीन में; उसे पाकी और बरतरी है उनके शिर्क से ।" (सूरह् यूनुस, 10:18)

ये लोग जिस किसी को भी अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, उनको सिफ़ारिश का इख़्तियार हम ने नहीं दिया । हाँ, मगर वह जो ठीक मौक़ए-वारदात पर देख कर के आया हो और वाकेआ का इल्म भी रखता हो । (सूरह् जुखरूफ, 43:86)*

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरेलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) कुरआन मजीद में देखें, "और जिनको ये अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वे शफ़ाअत का इख़्तियार नहीं रखते । हाँ, शफ़ाअत का इख़्तियार उन्हें है जो हक़ की गवाही दें और इल्म रखें ।"

(सूरह् जुखरूफ, 43:86)

नोट : हदीस में जो शफ़ाअत के लिए आता है कि पैग़म्बर, बुजुर्गाने-दीन, आलिम, हाफ़िज़, उम्मत के नेक लोग और दूध पीते बच्चे जो मर गए होंगे, वे सब शफ़ाअत करेंगे; वह सब सही है, मगर यह शफ़ाअत उन लोगों की क़बूल होगी और उन्हीं लोगों के लिए क़बूल होगी जिसके लिए अल्लाह इज़ाजत देंगे, जिनसे इत्तेफ़ाक से गुनाह हो गए होंगे और वे अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा होंगे और उनको अल्लाह और रसूल (सल्ल०) की शरीयत से मुहब्बत होगी । फिर उसके लिए अल्लाह चाहे तो शफ़ाअत का जिसे चाहे हुक्म दे; तो ही शफ़ाअत क़बूल होगी, बिना इजाज़त शफ़ाअत नामुमकिन है । देखो हज़रत नूह (अलै०) अपने बेटे और बीवी के लिए और हज़रत इब्राहीम (अलै०) अपने बाप के लिए और नबी (सल्ल०) अपने चचा अबू-तालिब के लिए शफ़ाअत नहीं करेंगे; क्योकि यह शफ़ाअत अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ है । शफ़ाअत ईमान वालों की होगी, कौन है ईमान वाले लोग देखें सवाल न. 73 ।

और ज़्यादा तफ़सील से जानने के लिए आप किताब-सिफ़ारिश पढ़ें या शरीअत या जहालत किताब में "शफ़ाअत (पेज 430)" पढ़ें या ईमेल करे : ***paighamEaman@yahoo.com***

67. क्या अल्लाह के साथ मिलाकर किसी से दुआ की जा सकती है?

जो शख़्स भी अल्लाह के साथ मिला कर किसी और से भी दुआ करे, तो उस की यह दुआ बेदलील है । ऐसे लोगों से उस के रब के हुज़ूर बड़ा सख़्त हिसाब लिया जाएगा; ऐसे लोग तो काफ़िर हो गए, जिन को कभी कामयाबी नहीं मिल सकती । (सूरह् मोमिनून, 23:117)

अल्लाह के साथ किसी और माबूद को दुआ में पुकारने से इंकार कर दो कि उस एक के सिवा दूसरा हाकिम नहीं हो सकता, उसकी रज़ामंदी चाहने के अलावा दूसरी जो भी चीज़ें हैं सब फ़ना और बरबाद होंगी । हुक्म भी उसी का है और तुम सब को लौट कर उसी के पास जाना है । (सूरह् क़सस, 28:88)

मसजिदें सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए; अल्लाह के साथ दुआ (बन्दगी) में किसी एक को भी मत पुकारो ।

आप कह दो : मैं तो केवल अपने रब को पुकारता हूँ और उसके साथ किसी एक को भी शरीक नहीं मानता । (सूरह् जिन्न, 72:18,20)

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) कुरआन मजीद में देखें, "और ये कि मसजिदें अल्लाह ही की हैं; तो अल्लाह के साथ किसी की बन्दगी न करो । तुम फ़रमाओ : मैं तो अपने रब की ही बन्दगी करता हूँ और किसी को उसका शरीक नहीं ठहराता ।" (सूरह् जिन्न, 72:18,20)

68. क्या सिर्फ़ अल्लाह ही से दुआ की जा सकती है ?

और जब सवाल करें आप से मेरे बन्दे कि मुझे कैसे पाएँ, मैं बहुत क़रीब हूँ । पहुँच ही जाता हूँ किसी पुकारने वाले की पुकार पर जब वह मुझसे दुआ करे । बस उन्हें चाहिए कि मेरा हुक्म क़बूल रखें और मुझ पर ईमान रखें, तो नेक राह पाते रहेंगे । (सूरह् अल-बक़रा 2:186)

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) कुरआन मजीद में देखें, "और ऐ महबूब, तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछे तो मैं नज़दीक हूँ, दुआ कुबूल करता हूँ पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे । तो उन्हें चाहिए मेरा हुक्म माने और मुझ ईमान लाएँ कि सही राह पाएँ।" (सूरह् अल-बक़रा, 2:186)

कह दो : मेरा रब सिर्फ़ ठीक बात का हुक्म देता है हर सज्दे के वक़्त अपने चेहरे को सीधा रखो और सिर्फ़ दुआ उसी से करो, ख़ालिस दीन उसी का क़बूल रखो, जैसे तुम को पहली बार बनाया है, फिर तुम दूसरी बार बनोगे । (सूरह् आराफ़, 7:29)

--बेशक मेरा रब दुआ और पुकार सुननेवाला है ।(सूरह् इब्राहीम, 14:39)

तुम से और अल्लाह के सिवा जिस किसी से तुम दुआ करते हो, मैंने पीछा छुड़ा लिया । अब मैं चला यहाँ से, मैं तो सिर्फ़ अपने रब से ही दुआ करना सही समझता हूँ, बड़ी उम्मीद रखता हूँ कि अपने रब से दुआ करके कभी नाकाम नहीं रहूँगा । (सूरह् मरयम, 19:48)

बेशक मैं और सिर्फ़ मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई बन्दगी के लायक नहीं; तो इबादत करना सिर्फ़ मेरी और नमाज़ क़ायम रखना मेरी याद के लिए । (सूरह् ताहा, 20:14)

तुम्हारे रब ने कहा है कि सिर्फ़ मुझसे ही दुआ करो, मैं तुम्हारी दुआ क़बूल करूँगा और जो लोग घमंड में मेरी इबादत को अहमियत नहीं देते, वह बहुत जल्द जहन्नम में बेइज़्ज़त हो कर दाख़िल होंगे ।

(सूरह् मोमिन, 40:60)

नोट : इस आयत को भी इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरेलवी के तर्जमा कन्ज़ुल ईमान (REF:927) क़ुरआन मजीद में देखें, "और तुम्हारे रब ने फ़रमाया : मुझ से दुआ करो, मैं क़ुबूल करूँगा । बेशक वे जो मेरी इबादत से दूर खिंचते हैं अनक़रीब जहन्नम में जाएँगे ज़लील हो कर।" (सूरह् मोमिन, 40:60)

69. क्या एक अल्लाह से ही दुआ करके नजात मिल जाएगी ?

और जो लोग ईमान लाए और हमारा डर रखते थे हम ने सिर्फ़ उन को नजात दी । (सूरह् हा-मीम सजदा, 41:18)

बेशक भले और नेक लोग उस दिन नेमतों से भरी जन्नतों में होंगे । उन का रब उन्हें भरपूर मेवे अता फ़रमाएगा, बहुत लज़्ज़त ले कर खा रहे होंगे; उन के रब ने उन को आग के अज़ाब से बचा लिया होगा । दुनिया की ज़िन्दगी कैसी गुज़री थी, आपस में ज़न्नत वाले एक-दूसरे से हालात पूछते होंगे । कहेंगे : हमने तो इस से पहले अपने घर-बार (यानी दुनिया) में रहते हुए अल्लाह से डर कर ज़िन्दगी गुज़ार दी । बस अल्लाह ने हम पर एहसान फ़रमाया कि हम को आग की लपटों से बचा लिया । हम तो इस से पहले उसी एक

अल्लाह को दुआ में पुकारते थे । यक़ीनन अल्लाह बड़ा एहसान फ़रमाने वाला और बहुत बहुत रहम करने वाला है ।

(सूरह् तूर, 52:17,18,25,26,27,28)*

*28. मालूम हुआ कि दुआ में सिर्फ़ एक अकेले अल्लाह को पुकारे, वह जन्नती है । लेकिन वे लोग जो हाजत और मुश्किल में अल्लाह के अलावा किसी को भी पुकारते हैं उन की नजात का वादा कुरआन में कहीं नहीं ।

70. क्या मुहम्मद (सल्ल०) से दुआ माँग सकते हैं ?

आप (सल्ल०) फ़रमा दो : मैं भी इंसान हूँ तुम जैसा; लेकिन मेरी तरफ़ वह्य भेजी जाती है कि तुम सब का माबूद सिर्फ़ एक ही माबूद है । बस अब जो कोई अपने रब की मुलाक़ात का तलबगार हो, उसे चाहिए की अमल अच्छा करे और अपने रब की बन्दगी में किसी एक को भी शरीक न रखे । (सूरह् कहफ़, 18:110)

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरेलवी के तर्जमा कन्ज़ुल ईमान (REF:927) कुरआन मजीद में देखें, "तुम फ़रमाओ : ज़ाहिर सूरतें बशरी में तो मैं तुम जैसा हूँ, लेकिन मुझे वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है, तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो, उसे चाहिए कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक ना करे ।"

(सूरह् कहफ़, 18:110)

अल्लाह के सिवा जिसे भी तुम पुकारोगे वे तुम्हारे ही जैसे बन्दे हैं, फिर भी उन को दुआ करके पुकारो, तो होना तो यह चाहिए कि तुम्हारी दुआ सुनकर फ़रियाद को पहुँच जाए, अगर तुम सच्चे हो तो ऐसा कर के दिखाओ । (सूरह् आराफ़, 7:194)

और ऐ नबी (सल्ल०), आप से पहले जब कभी हम ने रसूल भेजे, तो वे सब के सब आदमी ही थे यानी मर्द थे जिन की तरफ़ हम ने वह्य भेजी थी । लोगों तुम को यह मालूम न हो तो अहले-नसीहत से यानी उन लोगों से पूछ लो जिन को नबियों के हालात मालूम हों।

(सूरह् अम्बिया, 21:7,8)

नोट : इस आयत को भी इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरेलवी के तर्जमा कन्ज़ुल ईमान (REF:927) कुरआन मजीद में देखें, "और हमने तुमसे पहले न भेजे मगर मर्द, जिन्हें हम 'वह्य' करते; तो ऐ लोगो, इल्म वालों से पूछो, अगर तुम्हें इल्म न हो ।" (सूरह् अम्बियाा, 21:7)

बड़े से बड़े बन्दे भले कितने ही मर्तबे वाले हों और कितने ही इज़्ज़त वाले हो, मगर उन में से कोई एक ये कहे कि अल्लाह के सिवा मैं भी माबूद बन गया हूँ, तो ऐसों को हम जहन्नम में झोंक देंगे और ज़ालिमों के लिए हम ने ऐसी ही सज़ा तजवीज़ (तैयार) कर रखी है ।

(सूरह् अम्बिया, 21:29)*

और अल्लाह के सिवा किसी से दुआ भी न करना, जो तुझ को कभी नफ़ा न पहुँचा सके और नुक़सान भी न दे सके । अगर तू ने ऐसा किया तो तेरी गिनती भी ज़ालिम लोगों के साथ होगी ।

(सूरह् यूनुस, 10:106)

71. मुझे मदद किस से माँगनी चाहिए ?

हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं ।

(सूरह् फातिहा, 1:4)

अगर अल्लाह तुम को मदद देगा तो कोई तुम पर भारी नहीं पड़ सकता और अगर वह तुम को छोड़ दे तो उस के सिवा कौन है जो तुम्हारी मदद को आएगा ? और ईमान वालों को सिर्फ़ अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए । (सूरह् आले-इमरान, 3:160)

सच जानो कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है, वही ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई वली नहीं और कोई भी मददगार नहीं। (सूरह् तौबा, 9:116)

क्या अल्लाह के सिवा लोगों ने दूसरों को अपना वली बना रखा है, बस असल वली और मददगार तो अल्लाह है जो मुर्दों को ज़िन्दा कर देता है और वही हर चीज़ पर कुदरत रखता है । (सूरह् शूरा, 42:9)

72. गुनाह के बाद मैं ख़ुदा की ओर कैसे पलट सकता हूँ ?

जो कोई तौबा कर लेवे और ईमान पर क़ायम रह कर नेक अमल करता रहे, तो अल्लाह ऐसे लोगों के गुनाहों को नेकियों में बदल देगा और हक़ीकत में अल्लाह बख़्शिश फ़रमाने वाला और मेहरबान है ।

और जिसने तौबा की और नेक अमल करने पर चल पड़ा बस उसकी तौबा अल्लाह के यहाँ जा पहुँची और तौबा के लिए पलट कर जाना तो अल्लाह के सिवा कहीं नहीं । (सूरह् फुरकान, 25:70, 71)*

जो लोग नादानी से बुरे काम कर बैठते हैं, फिर तौबा कर लेते हैं और इसके बाद संभल कर सुधर जाते हैं, तो उसके बाद आप का रब ऐसे लोगों को बख़्शने के लिए और उन पर मेहरबानी करने के लिए तैयार है । (सूरह् नह्ल, 16:119)

और ऐसे लोग जब कोई बेशर्मी का काम कर बैठें या अपने आप का बुरा कर लें तो अल्लाह को ख़ूब याद करते हैं और फ़ौरन अपने गुनाहों की बख़्शिश मांगते हैं और ख़ूब समझ लो कि गुनाहों को अल्लाह के सिवा कौन माफ़ कर सकता है ? और जान-बूझ कर अपने किए पर अड़ते नहीं । (सूरह् आले-इमरान, 3:135)*

मेरे जिन बन्दों ने अपनी जान पर ज़्यादती की है, आप उन से कह दो अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न होना; बेशक अल्लाह तो तमाम गुनाह माफ़ कर देता है, यक़ीनी बात है कि वही गुनाह बख़्शने वाला और रहम करने वाला है । (सूरह् ज़ुमर, 39:53)*

*53. जिन लोगों ने ईमान लाने से पहले कुफ़्र व शिर्क करके अपने ऊपर ज़्यादती की उन तमाम गुनाहों को ईमान लाने के बाद अल्लाह माफ़ कर देगा । यह आयत सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले (अल्लाह) की हद से ज़्यादा कृपा और एक माफ़ करने और दया करने की उच्च स्तरीय शान का एलान करती है और सख़्त से सख़्त इलाज कराने से निराश हो चुके मरीज़ों को बीमारी से चंगा करने का असर रखती है । मुशरिक, अधर्मी, अल्लाह के एक होने होने के इंकारी लोग यहूदी, ईसाई, मजूसी, बिदअती, पापी, गुनहगार कोई भी हो इस आयत को सुनने के बाद अल्लाह की रहमत से निराश हो जाने और आस तोड़ने की उसके लिए कोई वजह नहीं; क्योंकि अल्लाह जिसके चाहे सब गुनाह माफ़ कर सकता है । फिर बन्दा ना उम्मीद क्यों हो ? बल्कि उसे अल्लाह की तरफ़ पलटकर अपने गुनाहों की माफ़ी मांगना चाहिए; ताकि इस आयत में दी गई ख़ुशख़बरी का वह हक़दार बन सके । (हवाला तफ़सीर शैख़ुल-हिन्द)

73. ईमान वाले लोग कौन होते हैं ?

ईमान वाले तो ऐसे होते हैं कि जब-जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उनके दिल दहल जाते हैं और जब-जब उन पर अल्लाह की आयतें पढ़कर सुनायी जाती हैं तो उनका ईमान बढ़ने लगता है और ये लोग अल्लाह पर ख़ूब भरोसा करते हैं । ऐसे लोग नमाज़ को क़ायम रखते हैं और हम ने जो कुछ उनको रिज़्क़ दिया है उसमें से हमारे नाम पर ख़र्च भी करते हैं । यही लोग ईमान लाने में सच्चे और हक़ पर हैं, उनके लिए बड़े दर्जे हैं उनके रब के दरबार में

और (भूलचूक से गुनाहों पर) उनकी बख़्शिश है और रोज़ी है इज़्ज़त वाली । (सूरह् अनफाल, 8:2,3,4)

जो लोग तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, और अल्लाह की तारीफ़ और हम्द बयान करने वाले और अल्लाह के रास्ते में चलने-फिरने वाले, रुकूअ़ करने वाले, सजदा करने वाले, भली बातों का हुक्म करने वाले और बुरी बातों से मना करने वाले और अल्लाह की किताब में बताए हुए क़ानून और हदबन्दी की हिफ़ाज़त करने वाले हैं; तो बस, यही लोग ईमान वाले हैं । इन्हें बशारत सुना दो ।

(सूरह् तौबा, 9:112)

बेशक ईमान वाले कामयाब हो गए । जो आज़िज़ी और इनकिसारी से अल्लाह के लिए अपनी नमाज़ अदा करते हैं । जो फुज़ूल और बेकार बातों से दूर रहते हैं । और जो अपनी ज़कात बराबर अदा करते हैं। और जो अपनी शर्म की जगह की हिफ़ाज़त का पूरा ख़्याल रखते हैं।

(सूरह् मोमिनून, 23:1-5)

यह वही हैं जो बड़े-बड़े गुनाहों और बेहयाई के कामों से बचते हैं और जब गुस्से में आ जाते हैं, तब भी माफ़ कर देते हैं । और वही हैं जो अपने रब के हुक्मों को क़बूल रखते हैं और नमाज़ अदा करते हैं और आपस के काम मशवरे से करते हैं और हमारे दिए हुए रिज़्क़ में से कुछ (ज़रूरतमन्दों को) दिया भी करते हैं । और ये वही हैं कि जब ईमान वालों पर कोई बग़ावत से कोई चढ़ाई कर दे तो मुक़ाबला भी करते हैं । (सूरह् शूरा, 42:37-39)

74. क्या शिर्क करने वालों के हक़ में नबी या कोई ईमान वाला मग़फ़िरत की दुआ कर सकता है ?

शिर्क करने वाले अगर क़रीबी रिश्ते-नाते वाले हों तब भी नबी की यह शान नहीं और ईमान वाले लोगों का भी यह काम नहीं कि इनके लिए मग़फ़िरत की दुआ करें; जब कि साफ़ ज़ाहिर हो गया कि ये लोग जहन्नम में जाने वाले हैं ।

और इब्राहीम (अलै०) का अपने बाप के लिए बख़्शिश की दुआ करना, उस वादे के सबब हुआ था, जो उन्होंने अपने बाप से किया था । फिर जब ज़ाहिर हो गया कि यह तो अल्लाह का दुश्मन है तो इब्राहीम (अलै०) ने अपने बाप के लिए बख़्शिश की दुआ करनी छोड़

दी । बेशक इब्राहीम (अलै०) थे भी बड़े नर्म दिल के और बहुत बर्दाश्त करने वाले । (सूरह् तौबा, 9:113,114)

नोट : शिर्क क्या होता है और इसकी कितनी किस्में होती हैं, इन तमाम बातों की जानकारी के लिए किताब 'शिर्क' (कुरआन की रोशनी में) पढ़ें । किताब दुकान से लें या ईमेल के ज़रिए फ़्री में पाने के लिए ईमेल करें- paighamEaman@yahoo.com

75. मुहम्मद (सल्ल०) को दुनिया में अल्लाह ने क्यों और किसलिए भेजा?

ऐ नबी (सल्ल०), हम ने आप को तमाम जहानों के लिए रहमत बना कर भेजा है । (सूरह् अम्बिया, 21:107)

आप (सल्ल०) फ़रमा दो कि ऐ इंसानो ! बेशक मैं अल्लाह की तरफ़ से तुम सब के लिए साफ़-साफ़ (डर और खुशी का) नोटिस जारी करने के लिए भेजा गया हूँ । (सूरह् हज, 22:49)

आप नसीहत की बात सुना दो । आप तो नसीहत करने वाले हैं । आपको इन पर निगराँ (निरीक्षक) बनाकर नहीं भेजा गया ।
(सूरह् ग़ाशिया, 88:21,22)

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) कुरआन मजीद में देखें, "तो तुम नसीहत सुनाओ; तुम तो यही नसीहत सुनाने वाले हो । तुम कुछ उन पर कड़ोड़ा नहीं (ज़ामिन) नहीं।" (सूरह् ग़ाशिया, 88:21,22)

ऐ नबी (सल्ल०) हमने आपको इस शान का रसूल बनाया है कि आपकी गवाही पर फ़ैसला किया जाएगा; हमने आपको खुशख़बरी देने वाला और ख़बरदार करने वाला बनाकर भेजा है। (सूरह् अहज़ाब, 33:45)

हमने आपको इंसानों के लिए खुशख़बरी देने वाला और अज़ाब से डराने वाला बनाकर भेजा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते ।
(सूरह् सबा, 34:28)

हमने आपको हक़ देकर भेजा है खुशख़बरी देने के लिए और अज़ाब से ख़बरदार करने के लिए और हर उम्मत में हमारे अज़ाब से डराने वाले (पैगम्बर) का गुज़र हो चुका है । (सूरह् फ़ातिर, 35:24)

यक़ीनन हम ने आप को खुशी और डर सुनाने के लिए हक़ और सच बात लेकर भेजा है, और जहन्नम में जानेवालों की पूछताछ तुमसे नहीं की जाएगी । (सूरह् अल-बक़रा, 2:119)

इन सब रसूलों को ख़ुशी की ख़बर देने वाले और डर सुनाने वाले बना कर भेजा, ताकि रसूलों के आने के बाद इंसानों की अल्लाह पर कोई हुज्जत-हीला बाक़ी न रहे और अल्लाह तो ज़बरदस्त हिक्मत वाला है । (सूरह् निसा, 4:165)*

4.*165. यानी अगर रसूल न भेजे जाते तो इंसान को बहाना मिल जाता कि हमको पालनहार ने अपनी मर्ज़ी-नामर्ज़ी बताई ही नहीं कि हम किस तरह से ज़िन्दगी गुज़ारें । इसलिए रसूल भेज दिए कि इलज़ाम बाक़ी न रहे । यह अल्लाह की हिकमत और तदबीर है ।

76. क्या मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह ही से सब कुछ माँगते थे ?

और आप (सल्ल०) किसी चीज़ के बारे में यह न कहो कि यह काम मैं कल करूँगा; मगर साथ में इन्शाअल्लाह ज़रूर कह लिया करो । (यानी अल्लाह चाहेगा तो मैं यह काम कल कर सकूँगा) ।

(तुम आगे जो भी काम कर सकोगे वह भी सिर्फ़ अल्लाह के चाहने से हो सकेगा) और जब कभी इन्शाअल्लाह कहना भूल जाओ, तो अपने रब को याद कर लिया करो और यूँ कहो कि बहुत मुमकिन है कि मेरा रब मुझे ऐसी राह चला दे, जिसके ज़रिए मैं भलाई को बहुत क़रीब से पा जाऊँ । (सूरह् कहफ़, 18:23,24)

ऐसे मुक़र्रब और इज़्ज़त वाले बन्दे भी अल्लाह के यहाँ आगे बढ़कर कोई बात करने की हिम्मत नहीं कर सकते; बल्कि अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ अमल करना ही उन की सिफ़त (ख़ूबी) है । उन के आगे पीछे जो कुछ हो रहा है उसे सिर्फ़ अल्लाह ही जानता है और यह मुक़र्रब और सम्मान्नीय हस्तियाँ ज़रूर हैं; लेकिन अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर किसी की शफ़ाअत करना उन के बस की बात नहीं और ये तो ख़ुद भी अल्लाह की हैबत से डरते-काँपते रहते हैं ।

(सूरह् अम्बिया, 21:27,28)

--------किसी रसूल के बस की बात न थी कि अल्लाह के हुक्म या इजाज़त के बग़ैर कोई निशानी (मोज़ेज़ा) दिखा सके--। (सूरह् मोमिन, 40:78)

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरेलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) क़ुरआन मजीद में देखें, "किसी रसूल को नहीं पहुँचता कि कोई निशानी ले आए बेहुक्मे-ख़ुदा के; फिर जब अल्लाह का हुक्म आएगा सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा और बातिल वालो का वहाँ ख़सारा ।" (सूरह् मोमिन, 40:78)

आप (सल्ल०) कह दो कि मैं कोई नया और अनोखा रसूल नहीं हूँ । मेरे और तुम्हारे मामले में क्या कुछ किया जाएगा, मैं नहीं बता सकता। मैं तो बस उस वह्य की इत्तेबा करने में लगा हूँ, जो मुझ पर की गई है । मैं तो खुला और साफ़-साफ़ डर सुनाने वाला हूँ ।

(सूरह् अहक़ाफ़, 46:9)

अपने जी (मन) से कोई बात बना कर नहीं बोलते । यह तो बस वह बात कहते हैं, जो इनकी तरफ़ वह्य की जाती है ।

(सूरह् नज्म, 53:3,4)

कह दो : मैं तो केवल अपने रब को पुकारता हूँ और उसके साथ किसी एक को भी शरीक नहीं मानता । आप फ़रमा दीजिए कि मैं तुम्हारे हक़ में किसी नुक़सान या भलाई का अधिकार नहीं रखता । आप फ़रमा दीजिए कि मुझ को भी अल्लाह के सिवा कहीं किसी एक का सहारा नहीं मिल सकता और अल्लाह के सिवा कहीं भी पनाह की जगह मैं खुद भी नहीं पा सकता । हाँ, लेकिन अल्लाह के हुक्म और पैग़ाम को पहुँचा देना मेरे ज़िम्मे है। ------वही अल्लाह ग़ैब (भविष्य) की बातें जानता है और अपने ग़ैब का इल्म किसी पर ज़ाहिर नहीं करता । हाँ, मगर अपने रसूलों में से जिसे चाहता है तो (कुछ ग़ैब की बातें उनपर ज़ाहिर करता है)----------------------।

(सूरह् जिन्न, 72:20,21,22,23,26,27)*

* 27. ग़ैब का इल्म अल्लाह के सिवा कोई नहीं । अलबत्ता अपने पैग़म्बरों में से किसी ख़ास ज़रूरत के तहत फ़ैसला कर दे तो कुछ ग़ैब की बातों को उन पर ज़ाहिर फ़रमाता है, लेकिन इस ज़ाहिर करने में भी वह सख़्त चोकी पहरे और हिफ़ाज़ती बन्दोबस्त फ़रमाता है, ताकि ग़ैब के ज़ाहिर करने में कोई कहीं कोई बाधा (खलल) न डाल सके । याद रखना चाहिए कि ग़ैब के ज़ाहिर करने और ग़ैब का ज्ञान रखने में बड़ा अन्तर है । ग़ैब की सूचना के लिए देखिए : सूरह् आले-इमरान, आयत 179 ।

77. क्या मुहम्मद (सल्ल०) को इल्मे-ग़ैब था ?

ऐ नबी (सल्ल०), तुम फ़रमा दो कि मैं ने तुम से कभी नहीं कहा कि अल्लाह के खज़ाने मेरे पास हैं और मैं ने यह भी नहीं कहा कि मैं ग़ैब का इल्म रखता हूँ और मैं यह भी नहीं कहता कि मैं कोई फ़रिश्ता हूँ । मैं तो बस इत्तेबा करता हूँ उस वह्य की जो मेरी तरफ़ की गई ---------------------। (सूरह् अनआम 6:50)*

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान कुरआन मजीद (REF: 927) में देखें, "तुम फ़रमा दो कि मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न यह कहूँ कि मैं आप ग़ैब जान लेता हूँ और न तुमसे यह कहूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ। मैं तो उसी का ताबेअ़ हूँ, जो मुझे 'वह्य' आती है--------------------------।" (सूरह् अनआम, 6:50)

ग़ैब की कुंजियाँ उसी (अल्लाह) के पास हैं, जिन को उस के सिवा कोई नहीं जानता, ज़मीन जंगल और समुद्र की सब चीज़ों का इल्म उसी को है-------। (सूरह् *अनआम,* 6:59)

नोट : इस आयत को भी इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF: 927) कुरआन मजीद में देखें, "और उसी के पास है कुंजियाँ ग़ैब की, उन्हें वही जानता है जो कुछ ख़ुश्की और तरी में है और जो पत्ता गिरता है वह उसे जानता है----------------।" (सूरह् अनआम, 6:59)

आप (सल्ल०) फ़रमा दो कि अल्लाह जो चाहे वही होकर रहता है। मैं तो अपने नफ़े-नुक़सान का भी मुख़्तार नहीं। अगर मैं ग़ैब जान लिया करता, तो यूँ होता मैं सब नफ़ा समेट लेता और कोई तकलीफ़ मुझे न पहुँच पाती। मैं ईमान वालों को डर और ख़ुशी सुनाने वाला हूँ। (सूरह् आराफ़, 7:188;* सूरह् हूद, 11:31)*

वही अल्लाह ग़ैब (भविष्य) की बातें जानता है और अपने ग़ैब का इल्म किसी पर ज़ाहिर नहीं करता। हाँ, मगर अपने रसूलों में से जिसे चाहता है, तो (कुछ ग़ैब की बातें उन पर जाहिर करता है)----।
(सूरह् जिन्न, 72:26,27)

-------और अल्लाह का यह दस्तूर नहीं कि तुम को ग़ैब की ख़बर दे, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों में से जिस को चाहता है (अनदेखी ख़बर देने के लिए) चुन लेता है----। (सूरह् आले-इमरान, 3:179; सूरह् नम्ल, 27:65)

*179. मालूम हुआ कि अल्लाह अपने नबियों में से जिसको चाहे और जब चाहे ग़ैब की ख़बर देता है। सूरह् जिन्न आयत नम्बर 26 में इज़्हारे-ग़ैब भी बताया गया है। इज़्हार, इत्तिला और इल्म में फ़र्क़ है। जानना चाहिए कि इल्मे-ग़ैब तो सिर्फ़ अल्लाह को है और ग़ैब की इत्तिला जब ज़रूरी हुआ अल्लाह ने अपने नबी को दे दी। इल्मे-ग़ैब अल्लाह के सिवा किसी को नहीं। इस पर कुरआन शरीफ़ की बहुत-सी आयतें हैं–सूरह-6 अनआम आयत नम्बर 50, सूरह्-7 आराफ़ आयत नम्बर 188, सूरह् हूद-11 आयत नम्बर 31। इसके अलावा भी और बहुत-सी जगहों पर बयान है। अब जो लोग नबी को इल्मे-ग़ैब साबित करते हैं वे या तो जाहिल हैं या ज़िद में ऐसी हरकत करते हैं और जो लोग यह कहते हैं कि नबी का इल्म आम इंसानों जैसा है, उन का कहना भी दुरुस्त नहीं। नबी का इल्म तमाम इंसानों से बढ़कर होता है।

78. क्या नबी (सल्ल०) ने कुरआन से पहले कोई किताब पढ़ी थी ?

इसके पहले किसी किताब का पढ़ना भी आप (सल्ल०) को न आता था और सीधे हाथ से लिखना भी आप नहीं जानते थे---------------।

(सूरह् अनकबूत, 29:48)*

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरेलवी के तर्जमा कन्ज़ुल ईमान (REF:927) कुरआन मजीद में देखें, "और इससे पहले तुम कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने हाथ से कुछ लिखते थे--------।"

(सूरह् अनकबूत, 29:48)

--नबी (सल्ल०) को अल्लाह के सिवा किसी ने पढ़ाया नहीं-- ।

(सूरह् आराफ़, 7:158)*

79. ऐसे कौन-से गुनाह हैं जिनको नबी (सल्ल०) की दुआ से भी माफ़ नहीं किया जा सकता ?

ऐ नबी (सल्ल०), इनके लिए बख़्शिश की दुआ करो या न करो, अगर आप उनके लिए सत्तर बार भी मग़फ़िरत की दुआ करें, तब भी हरगिज़ अल्लाह उनको नहीं बख़्शेगा; इसलिए कि ये नाफ़रमान हैं अल्लाह और उसके रसूल के-------। (सूरह् तौबा, 9:80)*

नोट : इस आयत को इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरेलवी के तर्जमा कन्ज़ुल ईमान (REF:927) कुरआन मजीद में देखें, "तुम उनकी मुआफ़ी चाहो या न चाहो अगर तुम सत्तर बार उनकी मुआफ़ी चाहोगे तो भी अल्लाह हरगिज़ उन्हें नहीं बख़्शेगा; ये इसलिए कि वे अल्लाह और उसके रसूल से मुनकिर हुए---।" (सूरह् तौबा, 9:80)

इनके लिए आप (सल्ल०) चाहे माफ़ी की दुआ करें या न करें, सब बराबर है कि अल्लाह इन्हें कभी माफ़ करने वाला नहीं । ऐसे नाफ़रमान लोगों को अल्लाह हिदायत की राह कभी नहीं दिया करता ।

(सूरह् मुनाफ़िकून, 63:6)*

* आप उनके लिए बख़्शिश की दुआ करें या न करें, अल्लाह उनको हरगिज़ माफ़ न करेगा । याद रखना चाहिए कि ऐसा कौन-सा गुनाह है, जो नबी की दुआ पर भी माफ़ न हो । मालूम हुआकि अल्लाह, रसूल की नाफ़रमानी से आदमी का काम बिगड़ जाता है, इससे बचना चाहिए । फ़रमाबरदार के गुनाह माफ़ हो गए । बाग़ी, ग़द्दार, दोग़ले मुशरिक व मुनाफ़िक़ यहां खुश हो लेते हैं कि हमारी बख़्शिश हो जाएगी, बल्कि इस पर बड़े-बड़े दावे करते हैं, मगर मरने के बाद मालूम होगा कि इनको धोखा हो गया था ।

80. क्या ज़मीन और आसमान की हर चीज़ अल्लाह की तसबीह (हम्द यानी तारीफ़) बयान करती हैं ?

सातों आसमान और ज़मीन और इनमें हर जगह जो कोई भी है सब अल्लाह की तारीफ़ और ख़ूबियाँ बयान करने में लगा हुआ है और कोई चीज़ भी ऐसी नहीं है जो अल्लाह की पाकी बयान करने में उसकी तारीफ़ के साथ मशगूल न हो; लेकिन तुम लोग उनका ये अन्दाज़े-बयान समझ नहीं पाते --------------। (सूरह् बनी-इसराईल, 17:44)

आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी है जो कुछ भी है सब का सब उसी अकेले (अल्लाह) की मिलकियत है और उस दरबार में जिन को नज़दीकी हासिल है वे अपने आप को बड़ा नहीं समझते और यह मर्तबा मिलने पर भी अल्लाह की इबादत में किसी तरह की काहिली सुस्ती नहीं करते; बल्कि रात दिन अल्लाह की ख़ूबियाँ बयान करने में ऐसे मशगूल रहते हैं कि उन्हें बन्दगी में कभी थकावट नहीं पड़ती ।

(सूरह् अम्बियाा, 21:19,20)*

आसमानों और ज़मीन में जो मख़्लूक़ (अल्लाह की पैदा की हुई तमाम चीज़ें) है, सब अल्लाह की तसबीह और पाकी बयान करती है--------।

(सूरह् हश्र, 59:1)*

81. मुझे इबरत (सीख) के लिए दुनिया में रह कर गुज़र जानी वाली क़ौमों के बारे में क्या सोच-विचार करना चाहिए ?

क्या उन को ज़मीन में चलने-फिरने का मौक़ा नहीं मिला कि वे निगाह डालते तो उन्हें पता चल जाता कि जो इन से पहले गुज़रे हैं उन का अंजाम क्या हुआ । उन के छोड़े हुए निशान बता रहे हैं कि वे ताक़त में इन से कहीं ज़्यादा थे और ज़मीन को उन्होंने ख़ूब बोया-जोता भी था; लेकिन उन के गुनाहों की वजह से अल्लाह ने जब उन्हें अज़ाब में घेर लिया तो अल्लाह के मुक़ाबले में उन को बचाने वाला कोई एक भी नहीं मिला । (सूरह् मोमिन, 40:21; सूरह् मोमिन, 40:82)

तुम से पहले भी बहुत-से दौर गुज़र चुके हैं, तो ज़मीन में चल-फिर कर देख लो । आख़िर क्या अंजाम हुआ (हक़ बात) झुठलाने वालों का । (सूरह् आले-इमरान 3:137)

नोट : पिछली क़ौमों के बारे में जो नई खोजें हुई हैं कि वे कितने लम्बे- चौड़े थे, कितने ताक़तवर थे, उन में कुछ को मौजूदा विज्ञान खोज चुका है। अगर आप देखना चाहते हों तो वीडियो फ़िल्में मौजूद हैं । देखने के लिए हमें ईमेल करें : paighamEaman@yahoo.com

82. दुनिया में मेरे लिए क्या फ़ायदे हैं ?

अल्लाह ने तुम्हारे लिए रात बनाई, ताकि तुम उस में सुख और आराम हासिल कर सको और दिन इसलिए बनाया कि तुम को अच्छी तरह दिखाई दे । बेशक अल्लाह तो लोगों पर वाक़ई बहुत मेहरबानी करने वाला है, लेकिन बहुत-से लोग अल्लाह का शुक्र ही अदा नहीं करते ।

वही अल्लाह है जिसने ज़मीन में स्थिरता दी और और आसमान को छत बना दिया और तुम्हारी सूरतें बना दीं और क्या ख़ूब अच्छी अच्छी सूरतें बना दीं और तुम्हारे खाने के लिए पाकीज़ा चीज़ें पैदा कीं; यही अल्लाह तुम्हारा रब है । क्या ख़ूब बरकत वाला है वह अल्लाह जो रब है सारे जहानों का । (सूरह् मोमिन, 40:61,64)

अल्लाह ने तुम्हारे लिए चौपाए जानवर बनाए, ताकि तुम कुछ पर सवारी कर सको और कुछ तुम्हारे खाने के काम आएँ ।

(सूरह् मोमिन, 40:79)

अल्लाह ने तुम को हलाल और साफ़-सुथरा पाकीज़ा रिज़्क अता फ़रमाया है । उसे खाओ, और अगर तुम सिर्फ़ एक अल्लाह की बन्दगी करने वाले हो, तो उस की दी नेमत पर उसका शुक्र अदा करो । (सूरह् नह्ल, 16:114)

अल्लाह वह है जिसने आसमान और ज़मीन बनाए और आसमान से पानी उतारा । फिर तुम्हें रिज़्क़ (रोज़ी) देने के लिए इससे फल-फ्रूट निकाले और समन्दर में नाव जहाज़ तुम्हारे ताबे (क़ाबू) कर दिए, जो उसके हुक्म से चलती है और बहती हुई नदियों और नहरों को तुम्हारे लिए काम में लगा दिया । और तुम्हारी ज़रूरतों के हर एक सवाल को उसने पूरा किया और अल्लाह की नेमतों को अगर गिनना चाहो तो नामुमकिन है । बेशक इंसान का हाल भी अजीब है कि फिर भी बेइन्साफ़ी और नाशुक्री पर उतर जाता है । (सूरह् इब्राहीम, 14:32,34)*

83. मेरे दिल को चैन और सुकून कैसे मिलेगा ?

ईमान में पक्के वे लोग हुआ करते हैं, जिन के दिल अल्लाह के ज़िक्र से चैन और तसल्ली पाते हैं, और आगाह हो जाओ कि अल्लाह ही के ज़िक्र से दिलों को (चैन-ओ-सुकून) इतमीनान मिलता है ।

(सूरह् रअद, 13:28)

84. क्या कुरआन में विज्ञान की बातें हैं या मौजूदा सांइस से टकराव है?

नोटः कुरआन में लगभग 1000 से ज़्यादा आयतें सांइस के मुत्तालिक़ हैं इन सब आयतों को लिखने के लिए यह किताब तो कम पड़ेगी । बेहतर होगा आप एक दूसरी किताब 'कुरआन और मौजूदा सांइस' पढ़ें । इस किताब को फ़्री में मेल से लेने के लिए ईमेल कर सकते हैं : paighamEaman@yahoo.com

85. मुझे किन लोगों से दोस्ती या ताल्लुक़ात नहीं रखने चाहिए ?

ऐ ईमान वालो ! अगर तुम्हारे बाप और भाई ईमान के मुक़ाबले कुफ़्र को पसन्द करते हों, तो फिर उन से दोस्ती न रखो और जो कोई तुम में से इनको दोस्त बनाएगा, तो बस, ऐसे लोग खुद अपना ही नुक़सान करने वाले हैं । (सूरह् तौबा, 9:23)

ऐ ईमान वालो ! जो लोग तुम्हारे दीन (मज़हब) को खेल-तमाशा बनाकर हँसी मज़ाक उड़ाते हैं, ऐसे लोग चाहे तुमसे पहले किताब पाने वाले हों या इंकारी हों उन को अपना दोस्त न बनाओ ------------।

(सूरह् मायदा, 5:57)*

86. मैं इस्लाम की दावत किस तरह दूँ ?

ऐ नबी (सल्ल०), आप अपने रब के रास्ते की तरफ़ लोगों को हिक्मत, दानाई और दानिशमन्दी के साथ और अच्छी नसीहत के साथ दावत देते रहिए । ज़रूरत पड़ने पर इनसे बहस करनी पड़े तो निहायत ही हुस्न व ख़ूबी के साथ बात समझाइए । बेशक आपका रब ख़ूब अच्छी तरह जानता है हर उस शख़्स को जो उसके रास्ते से दूर भाग गया है और उन लोगों को भी जानता है जो उसकी राह पर चल रहे है । (सूरह् नह्ल, 16:125)

तुम में एक जमाअत ज़रूर होनी चाहिए जो बुलाती रहे अच्छे कामों की तरफ़, भलाइयों का हुक्म करे और बुराइयों से मना करती रहे और यही लोग कामयाब होने वाले हैं । (सूरह् आले-इमरान, 3:104)

बेटा, नमाज़ को क़ायम रखना, भले कामों का हुक्म करना और बुरे कामों से मना करते रहना और इस ख़िदमत में तुझ पर जो मुसीबत पड़ जाए उसे बर्दाशत कर लेना । बेशक जी को थाम लेना बड़े हौसले का काम है । (सूरह् लुक़्मान, 31:17)

87. क्या अल्लाह ने सिर्फ़ कुरआन ही नाज़िल किया है या और कोई भी आसमानी किताबें हैं ?

और जब अल्लाह की तरफ़ से एक रसूल उन के पास आ गया, जो उन के पास वाली (पहली) किताबों को सच बताता है---------------।

(सूरह् अल-बक़रा, 2:101)*

उसी ने आप पर यह किताब (कुरआन) उतारी, जो हक़ के साथ सच साबित करती है अपने से पहली किताबों को, और तौरात और इंजील भी उसी ने उतारी थी । (सूरह् आले-इमरान, 3:3)

और हर उम्मत में हम ने पैग़ाम पहुँचाने वाला भेजा-----------------।

(सूरह् नह्ल, 16:36)

पहले भी रसूलों को रौशन दलीलें और किताबें दे कर (अल्लाह ने) भेजा था और हम ने ये नसीहतनामा (कुरआन) इस लिए उतारा कि आप इंसानों को साफ़-साफ़ खोल कर बता दो कि उनके लिए क्या कुछ उतारा गया है; ताकि वो अपनी हालत सुधारने का ध्यान करें ।

(सूरह् नह्ल, 16:44)

88. अगर कोई कुरआन के सच्चा होने में शक करे तो ?

यह किताब ज़बरदस्त हिक्मत वाले अल्लाह ने उतारी है ।

(सूरह् जासिया, 45:1)

लोग क्या बकते हैं कि यह कलाम तो इसने अपने जी से बना लिया है । आप (सल्ल०) फ़रमा दो कि तुम ऐसी दस सूरतें अपने जी से बनाकर पेश कर के बता दो और अल्लाह के सिवा जिसको चाहो मदद के लिए बुला लो ----------। (सूरह् हूद, 11:13)

ये लोग बकवास करते हैं कि इसने यह कुरआन ख़ुद ही बना लिया है । आप (सल्ल०) जवाब में फ़रमा दो कि तुम भी इस कुरआन जैसी सिर्फ़ एक सूरह् ही बना लाओ, और अल्लाह के सिवा जिन-जिन

को जमा कर सको सब को पुकार कर ले आओ, अगर सच्चे हो तो यह कर के दिखा दो । (सूरह् यूनुस 10:38)

ज़बरदस्त रहम करने वाले अल्लाह की तरफ़ से यह कुरआन उतारा गया है । (सूरह् यासीन, 36:5)

नोट : कुरआन पर शक करने वाले लोग हर दौर में होते हैं, मगर जब उनको इस बारे में पूरे सुबूतों के साथ और दलीलों से बात समझाई जाती है, तो वे ईमान लाने पर मजबूर हो जाते हैं । ऐसी ही दलीलों से भरी किताब 'क्या कुरआन अल्लाह का कलाम है?' पढ़ें ।फ़्री में मेल से पाने के लिए ईमेल करें : paighamEaman@yahoo.com

89. इंसानों के मरने के बाद अल्लाह उन्हें वापस ज़िन्दा कैसे करेगा?

एक और क़िस्सा उस आदमी का, जो एक बस्ती पर से गुज़रा जो अपनी छतों पर गिर चुकी थी, वह बोला : आबादी के मर जाने के बाद अल्लाह उसे कैसे ज़िन्दा करेगा ? तब अल्लाह ने उसको एक सौ बरस के लिए मार डाला, फिर ज़िन्दा किया तो पूछा : तू कितनी देर मरा पड़ा रहा । वह बोला : मैं एक दिन या दिन से कुछ कम । अल्लाह ने कहा : नहीं, बल्कि तू मर कर एक सौ बरस तक पड़ा रहा, अपने खाने-पीने की चीज़ों पर निगाह डाल कि वह अब तक सड़ी-गली नहीं, और देख ले अपने गधे को (जो मर कर हड्डियों का चूरा हो गया) तेरे इस क़िस्से को हम इंसानों के लिए नमूना बनाना चाहेंगे और अब देख ले इस गधे की हड्डियाँ किस तरह हम जोड़ देते हैं । फिर इस पर गोश्त चढ़ा कर चमड़े का लिबास पहना देते हैं । यह बात जब उसके सामने हो गई, तो बोल पड़ा : मैं ख़ूब जान गया, अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है । (सूरह् अल-बक़रा, 2:259)

और जब इब्राहीम (अलै०) ने अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब, दिखा दे मुझे किस तरह तू मुर्दों को ज़िन्दा करेगा । रब ने कहा : तुझे यक़ीन नहीं? अर्ज़ किया : क्यों नहीं, यक़ीन तो ख़ूब है; लेकिन इस वास्ते कि मेरे दिल को तसल्ली हो जाए । फ़रमाया तो पकड़ ले चार परिन्दों को और अपनी तरफ़ मानूस कर ले । फिर उनके अलग-अलग टुकड़े पहाड़ियों पर डाल कर आ जा; फिर उनको आवाज दे । सब तेरे पास दौड़ते हुए आ जाएँगे और जान ले अल्लाह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है । (सूरह् अल-बक़रा, 2:260)*

ऐ इंसानो ! मरने के बाद ज़िन्दा होने पर कभी शक पड़े तो ग़ौर कर लेना कि हम ने तुम को पहली बार मिट्टी से पैदा किया; फिर टपकती बून्द की शक्ल दी; फिर ख़ून का लोथड़ा बना दिया; फिर गोश्त की बोटी बना दी; कभी बोटी पर सूरत का नक्शा बना दिया; कभी बिना बनाए अधूरी छोड़ दी; यह साफ़-साफ़ बयान हम तुम्हारे लिए जारी कर रहे हैं, इसे भूलना मत । फिर तुमको तुम्हारी माँ के पेट में एक मुद्दत, जब तक हम चाहें, ठहराए रखते हैं । इस के बाद तुमको बच्चा बना कर तुमको बाहर आने का मौक़ा देते हैं । फिर तुम अपनी भरी जवानी को पहुँच पाते हो और तुम में से कोई तो जवानी में ही मौत में धर लिए जाते हो और किसी को निकम्मी उम्र तक पहुँचा दिया जाता है -------------------। (सूरह् हज, 22:5)*

अब हर एक को समझ लेना चाहिए कि अल्लाह बरहक़ है और बेशक बात यह है कि वही मुर्दों को ज़िन्दा कर सकता है और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है ! (सूरह् हज, 22:6)

90. क़ियामत कब आएगी ?

आप से सवाल करते हैं कि क़ियामत की वह ख़ास घड़ी कब आएगी? आप कह दो : इस का इल्म तो सिर्फ़ मेरे रब को है । क़ियामत का जलाल और उसके वक़्त को ज़ाहिर करना अल्लाह के सिवा किसी के बस की बात नहीं । आसमानों और ज़मीन में बड़ा भारी हादसा होगा और तुम पर यह अचानक टूट पड़ेगी । आप से पूछते हैं कि जैसे आप उसका वक़्त तलाश करने में लगे हो । आप कह दो कि इसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते । (सूरह् आराफ़, 7:187)

91. क़ियामत से पहले जब सूर फूँका जाएगा तो क्या होगा ?

और जिस दिन सूर फूँका जाएगा, आसमान और ज़मीन में जो कोई जहाँ भी होगा सब बेहोश हो जाएँगे । मगर अल्लाह जिसे चाहे तो और बात है, फिर जब दूसरी बार सूर फूँका जाएगा तो सब के सब ज़िन्दा हो कर खड़े हो जाएँगे और एक-दूसरे को मारे हैरत से फटी आँखों से देख रहे होंगे । (सूरह् ज़ुमर, 39:68)*

उस दिन जब तुम उस ज़लज़ले को देखोगे तो हर दूध पिलाने वाली माँ अपने दूध पीते लाडले को भूल जाएगी और अपने लाल को छोड़

कर भागने लगेगी और हर हमल (गर्भ) वाली का हमल गिर जाएगा और तुम देखोगे कि लोग मदहोश होकर चकरा रहे होंगे जब कि मदहोश न होंगे, बल्कि उस दिन अल्लाह का अज़ाब बहुत ही सख़्त होगा । (सूरह् हज, 22:2)

बस जब सूर फूँका जाएगा, उस दिन उनके आपस के कोई रिश्ते-नाते भी काम न आएँगे और कोई किसी को पूछने वाला भी न होगा ।

(सूरह् मोमिनून, 23:101)*

92. क्या इंसान को मरने के बाद वापस दुनिया में पैदा होना है ?

---------नहीं, नहीं, हरगिज़ नहीं, अब तुमको दुनिया में जाने का मौक़ा नहीं दिया जाएगा और उनके पीछे एक आलमे-बरज़ख़ की आड़ होगी उस दिन तक जिस दिन जब कि मुर्दों को ज़िन्दा किया जाएगा ।

(सूरह् मोमिनून, 23:100)*

93. मुर्दे सुनते हैं या कोई उन्हें अपनी आवाज़ सुना सकता है ?

आप (सल्ल०) मुर्दों को हरगिज़ नहीं सुना सकते और पीठ फेर कर भागने वाले बहरों को भी अपनी आवाज़ नहीं सुना सकते ।

(सूरह् नम्ल, 27:80)

और ठीक इसी तरह ज़िन्दे और मुर्दे दोनों बराबर नहीं हो सकते । बेशक अल्लाह जिसे चाहे सुना दे, मगर आप (सल्ल०) उनको नहीं सुना सकते जो कब्रों में हैं । आप तो बस डर की ख़बर सुनाने वाले हो । (सूरह् फ़ातिर, 35:22, 23)*

*22. ज़िन्दे और मुर्दे दोनों बराबर नहीं । नबी का काम डर सुनाना है कि तुमको अल्लाह के सामने अपने आमाल (कर्मों) के बारे में जवाब देना होगा । मौत से पहले समझ लो और ईमान को कुबूल रख कर शिर्क छोड़ दो । अब रहे मुर्दे तो उनको सुनाने की कोई ज़रूरत नहीं कि वे अपने रब हुज़ूर पहुंच चुके हैं । बाक़ी कोई इस इरादे से मुर्दे को सुनाना चाहे कि नेक हैं, मेरी दुआ सुनकर मेरी ज़रूरत पूरी करेगा तो यह शिर्क है । इस आयत में उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु अन्हा) ने फ़रमाया कि मुर्दा नहीं सुनता । हां, किसी ख़ास अवसर पर अल्लाह किसी मुर्दे को सुना देना चाहे तो यह और बात है । जैसे किसी मरे हुए को सलाम पहुंचा देना या कभी किसी ख़ास वजह से किसी मरे हुए को दुनिया की कोई ज़रूरी आवाज़ अल्लाह चाहे तो सुना सकता है । बाक़ी मुर्दे को फ़ुज़ूल बातें सुनाने से आख़िर किसी ज़िन्दे या मुर्दे का क्या फ़ायदा हो सकता है और आम हालत में प्रकृति के नियम के हिसाब से किसी मुर्दे के सुनने का काई सवाल ही पैदा नहीं होता । जो लोग मरे हुए बुज़ुर्गों को पुकारते हैं और उनसे अपनी मन्नतें मांगते हैं वे अपनी जांच-पड़ताल अभी

से कर लें कि उनका अमल क़ुरआन व हदीस के अनुसार नहीं है कि वे अल्लाह के नेक बन्दों के स्वर्गलोक के आराम, सुख-चैन में बाधा डालने वाली परेशानी वाली अच्छी-बुरी बातें सुना कर ज़बरदस्ती तकलीफ़ पहुंचाने की एक नाकाम और ना काबिले-अमल (दुष्कर) हरकत करते हैं ।

94. हम अल्लाह और रसूल (सल्ल०) से मुहब्बत किस तरह करें ?

कह दो : अगर तुम मुहब्बत रखते हो अल्लाह से, तो मेरी राह चलो। अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर देगा-----------। (सूरह् आले-इमरान, 3:31)*

कह दो : अल्लाह और उसके रसूल के हुक्मों को मान लो । फिर अगर वे हट जाते हैं तो अल्लाह ऐसे मुनकिरों को दोस्त नहीं रखता।

(सूरह् आले-इमरान, 3:32)*

ऐ नबी (सल्ल०) ! आप कह दो : अगर तुम्हारे बाप और बेटे, भाई और बीवियाँ, तुम्हारी बिरादरी और वह माल जो तुमने मेहनत से कमाया और वह कारोबार जिसकी मंदी का तुम को डर लगा रहता है और तुम्हारे रहने के मकान जो तुमको पसन्द हैं, अगर ये सब कुछ तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और अल्लाह की राह में जान-माल लगा देने से ज़्यादा महबूब हैं, तो फिर रास्ता देखो कि अल्लाह का कोई हुक्म तुम्हारे बारे में आ जाए और अल्लाह के फ़रमान का जो लोग लिहाज़ नहीं रखेंगे, अल्लाह उन को हिदायत नहीं देगा ।

(सूरह् तौबा, 9:24)*

*31&32. नबी की मुहब्बत का दावा उस वक़्त सही होगा, जब महबूब की पसन्द पर चला जाए । जिस तरह जी चाहे उस तरह चलने से मुहब्बत का दावा ग़लत होगा।

95. ज़िन्दगी गुज़ारने का और अल्लाह की इबादत का तरीक़ा कैसा होना चाहिए ?

यक़ीनन तुम सब के लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के हर अमल में बहुत अच्छा नमूना मौजूद है; जो भी अल्लाह और आख़िरत के दिन का उम्मीदवार हो और अल्लाह का ज़िक्र बहुत बहुत करता हो तो उसे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की ज़िन्दगी के मुताबिक़ चलने में पूरी कामयाबी है । (सूरह् अहज़ाब, 33:21)

96. अल्लाह का वली कौन होता है ?

अच्छी तरह सुन लो कि अल्लाह के वलियों (दोस्तों) पर कोई ख़ौफ़ नहीं और वे कभी ग़मगीन नहीं रहेंगे । अल्लाह के वली (दोस्त) वे हैं जो ईमान लाए और अल्लाह की नाफ़रमानी से बचते रहे । उनके लिए दुनिया व आख़िरत की ज़िन्दगी में बशारत ही बशारत है--------।

(सूरह् यूनुस, 10:62,63,64)

97. मेरे लिए आख़िरत की सज़ा से बचने का क्या तरीक़ा है ?

बेशक तमाम इंसान घाटे (नुक़सान) में है । मगर वो जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए और हक़ की वसीयत (दीन की दावत) की और सब्र करने की आपस में वसीयत करते रहे वह नुक़सान से बच गए । (सूरह् अस्र, 103:2,3)

98. सज़ा से बचने के वास्ते एक काम करूँ, एक न करूँ तो ?

--------------तो क्या तुम अल्लाह की किताब के कुछ हिस्से को मानोगे और दूसरे हिस्से का इंकार करोगे ? फिर तुम ही बताओ कि क्या सज़ा होनी चाहिए तुम में ऐसा करने वालों की, सिवाए इसके कि दुनिया में उन्हें ज़िल्लत की मार मारी जाए, और क़ियामत के दिन उन्हें कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाए । तुम जो भी काम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं । (सूरह् अल-बक़रा, 2:85)

99. पर जब में दीन की बात जानता नहीं तब क्या करूँ ?

-----------ऐसा क्यों न करें कि हर आबादी से एक-एक टुकड़ी (जमाअत की) दीन की समझ-बूझ हासिल करने (सीखने) को निकले और जब अपनी बस्ती के लोगों की तरफ़ वापस लौट आवें, तो अपनी बिरादरी को चौकन्ना कर दें (अल्लाह की नाराज़गी से बचने का तरीक़ा अपने इलाक़े के लोगों को सिखाएँ); ताकि ये लोग भी अपने बचाव की फ़िक्र करें । (सूरह् तौबा, 9:122)*

नोट : इस आयत को भी इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरेलवी के तर्जमा कन्जुल ईमान (REF:927) कुरआन मजीद में देखें, "-----क्यों न करे कि उन के हर गिरोह में से एक जमाअ़त निकले कि दीन की समझ हासिल करें और वापस आकर अपनी क़ौम को डर सुनाएँ इस उम्मीद पर कि वे बचें ।"

(सूरह् तौबा, 9:122)

तुम एक बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए खड़ी की गई है, तुम भलाई का हुक्म करोगे और बुराई से रोकते रहोगे और तुम अल्लाह पर ईमान भी रखते हो और अगर पहले से किताब पाए हुए लोग भी ईमान में आ जाते तो उनके हक़ में बेहतर था ------------------।

(सूरह् आले-इमरान, 3:110)

अल्लाह को चाह कर पा लेने के लिए ख़ूब मेहनत कर डालो, ऐसी मेहनत और अनथक कोशिश जैसा कि उसका हक़ है । उसने तुम्हारा चुनाव कर लिया है और दीन में तुम पर कोई तंगी-मुशिकल अल्लाह ने नहीं डाली । तुम्हारे बाप इब्राहीम (अलै०) की मिल्लत पर तुमको खड़ा कर दिया । उसने तुम्हारा नाम ताबे-फ़रमान यानी मुस्लिम रखा; इसके पहले भी और इस किताब में भी तुम्हारा नाम मुसलमान मशहूर हुआ; ताकि रसूल तुम पर गवाही क़ायम करें और तुम सब इंसानों पर हक़ की गवाही दो ------------------। (सूरह् आले-इमरान, 3:110)*

*122. मालूम हुआ कि हर इलाक़े, बिरादरी, जमाअत और गरोह में से चन्द आदमी बराबर निकल कर इस्लामी तालीम के मरकज़ों में जाएं और दीन का इल्म हासिल कर के वापस आएं और अपने इलाक़े के लोगों में दीन की पहचान कराएं; ताकि इल्मे-दीन फैले और भलाई-बुराई की तमीज़ बस्ती के हर आदमी को होती रहे।

100. मैं किताब (तौरात, इंजील, ज़बूर) पाए हुए लोगों को दावत कैसे दूँ?

अहले-किताब से बहस और तकरार न करो । इनसे बहुत ख़ूबी और भलाई से बात करो; मगर इनमें जो लोग झगड़ालू ज़ालिम है, उनसे हरग़िज न उलझो । हाँ, इतना कह दो : हम ईमान लाए इस किताब (क़ुरआन) पर जो हमारे लिए नाज़िल फ़रमाई गई और जो किताबें तुम लोगों के लिए नाज़िल फ़रमाई गईं उन पर भी हम ईमान लाए और हमारा और तुम्हारा माबूद (ख़ुदा) भी एक है । फिर हम तुम में झगड़ा कैसा ? हम तो उसी एक माबूद के सामने अपना सर (सजदे में) डाल चुके । (सूरह् अनकबूत, 29:46)

101. तो क्या हर मुसलमान ऐसा ही करता है जो आपने लिखा है?

जब इंसान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो अपने रब को दिल से दुआ करके पुकारता है और जब अल्लाह अपनी रहमत से नेमत अता फ़रमा कर उसकी मुसीबत दूर कर देता है, तो फिर इंसान ऐसा भूल जाता है जैसा इस पर कभी आफ़त पड़ी ही न थी और कभी इस से

पहले उसने अल्लाह को पुकारा भी न था । फिर अल्लाह के शरीक बनाने लगता है और अल्लाह की राह से गुमराह करने का काम भी शुरू कर देता है ------------------------। (सूरह् जुमर, 39:8)

लोगों में तो कोई कोई ऐसा भी है जो किनारे खड़ा अल्लाह की बन्दगी कर लेता है, अगर कुछ फ़ायदा हाथ आया तो ज़रा देर को तसल्ली रही; लेकिन किसी आज़माइश में डाला गया तो जहाँ से आया था, उल्टा मुँह के बल भाग गया । बस दुनिया व आख़िरत दोनों खो बैठा । यह खुला हुआ नुक़सान है । (सूरह् हज, 22:11)

और इंसान का हाल यह है कि कभी-कभी ऐसी दुआएँ माँगता है जो भलाई के बजाय बुराई माँगने की दुआ होती है और इंसान है ही बड़ा जल्दबाज़ । (सूरह् बनी-इसराईल, 17:11)

इंसान पर जब भी किसी नुक़सान ने घेरा डाला, बस हमें पुकारने लग जाता है । फिर जैसे ही हम ने उस को अपनी नेमत से नवाज़ दिया, तो फिर कहने लगता है यह सब कुछ तो मेरी क़ाबलियत की वजह से मिला है; हालाँकि ऐसी हालत तो इम्तिहान की हालत है, लेकिन बहुत लोग इस हक़ीकत को जानते ही नहीं । (सूरह् जुमर, 39:49)

और हमने इंसानों के लिए इस कुरआन में हर तरह की मिसाल बयान करके बात ठीक तरीक़े से बता दी; मगर अक्सर लोगों का यह हाल है कि बग़ैर इंकार किए उनसे रहा न गया । (सूरह् बनी-इसराईल, 17:89)

102. अगर मैं अब भी इन सारी बातों का इंकार कर दूँ तो ?

और एलान कर दो कि यह कुरआन तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ बताने वाला है । अब जिसका जी चाहे इस पर ईमान लाए और जो चाहे इंकार कर दे । इंकार करने वाले जालिमों के लिए हम ने भड़कती आग तैयार कर रखी है, जिसकी गरम चादरें उनको अपने घेरे में लिए होगी और जब भी प्यास की फ़रियाद करेंगे तो उन्हें तेल की तलछट की खौलता हुआ पानी पीने को दिया जाएगा, जो उनके चेहरे को भून डालेगा; बहुत बुरी चीज़ पीने के लिए दी गई और कितनी भयानक जगह जाकर उन्हें ठहरना पड़ा । (सूरह् कहफ, 18:29)

हमारी आयतों को छोड़कर जो लोग फ़िरक़े-फ़िरक़े हो गए तो क़ियामत के दिन आपका रब उनके इख़्तिलाफ़ात का फ़ैसला फ़रमा देगा ।

(सूरह् सजदा, 32:25)

आप कह दो : गुमराही में फँसना चाहता है तो अल्लाह भी उसे लम्बे वक़्त तक ढील देगा; यहाँ तक कि या तो हमारे वादे के मुताबिक़ उनको अज़ाब का सामना करना होगा या फिर क़ियामत का मौक़ा हर हाल में उनके सामने आकर रहेगा । तब उनको पता चल जाएगा कि ख़ैर (दीन) को छोड़कर शर (खुराफ़ात) के मकान में कौन घिर गया था और क़ियामत के लकर, जत्थे में कौन कमज़ोर साबित हुआ ।

(सूरह् मरयम, 19:75)

ऐ नबी (सल्ल०), आप जिसे चाहें उसे हिदायत पर नहीं ला सकते; लेकिन अल्लाह जिसे चाहे हिदायत अता करता है और जिन लोगों को सही राह पर चलने की तमन्ना है, अल्लाह उन्हें ख़ूब जानता है।

(सूरह् कसस, 28:56)

आप फ़रमा दो कि नतीजे का इन्तिज़ार तो सब को करना ही पड़ेगा; तो तुम भी इन्तिज़ार करो बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा कि सीधे रास्ते (दीन) पर कौन थे, हिदायत पर चल पड़ने में कौन कामयाब रहा । (सूरह् ताहा, 20:135)

अगर तुम अल्लाह के बताए रास्ते पर न चलोगे तो अल्लाह तुम को सख़्त तकलीफ़ देगा और तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम को बदल कर ले आएगा और तुम अल्लाह का कुछ न बिगाड़ सकोगे---। (सूरह् तौबा, 9:39)

अल्लाह से दुआ है कि हम सब को दीन की बात पढ़ने, सुनने और समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हम सबको नबी करीम (सल्ल०) के तरीक़े पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए । आमीन ! वआख़िरदव्ना अनिलअम्दुलिल्लाही रब्बील आलमीन ।

अगर कोई सवाल हो आप ईमेल के ज़रिए पूछ सकते हैं । इन्शाअल्लाह जवाब दिया जाएगा । ईमेल आई डी : paighamEaman@yahoo.com